"जित दिहाड़े धनवरी साहे लये लिखाये"

वचन सत्संग हजूर सन्त कृपालसिंह जी महाराज

(सत्संदेश दिसम्बर 1959 में प्रकाशित प्रवचन)

परमार्थ किसका नाम है ? परमार्थ के लफ्जी मायने हैं, परम-अर्थ। अर्थ कहते हैं, लाभ को, फायदे को, Profit को, Gain को। ऐसा फायदा, ऐसी Gain जो सबसे बढ़ चढ़ कर है, Lasting हो, कभी फ़ना न हो। अब आप गौर से देखिये कि दुनिया में हर एक इन्सान कुछ न कुछ फायदे के ही लिये काम करता है ना। जितने हम काम कर रहे हैं,फायदा तो हर चीज में है, मगर इसमें से परम अर्थ कौन सा रखता है ? आपको बहुत सारा रुपया पैसा जायदादें मिल गई। बड़े नौकर-चाकर, मोटरें और और जो भी सब सहूलियत के सामान हैं, रहने को बड़े आलीशान मकान, महल मिल गये, यह आपको मिला, मगर यह कब तक है ? जब तक आपकी देह है। तुम जिसम नहीं। तुम शरीर रखते हो। तुम मकान नहीं, मकान के मकीन हो। यह Dwelling house नहीं, तुम Indweller of the house हो (तुम मकान नहीं मकान में रहने वाले हो)। यही बात समझनी है। समझनी क्या, बात यही है कि हम जिसम नहीं है, मकान नहीं हैं मगर गलती के सबब से, भूल के सबब से हम शरीर का रूप बन गये। आखर हम देखते हैं ऐसे ही शरीर चार भाई उठाते हैं,जंगल में बांस दे देते हैं। तो इसके चलाने वाला जब तक इसके साथ है, तब तक इसकी कीमत है, नहीं तो कौन पूछता है ! यह बाहरी सामान इस शरीर करके है। और शरीर भी हमारे साथ हमेशा नहीं रहता, चन्द रोज है, दस साल, बीस साल, सौ साल, बड़े बड़े ऋषि मुनि, महात्मा आये, वह हस्तियां भी आई जो Mouthpiece of God थी, मगर उन्होंने भी शरीर लिया और छोड़ गये। अवतार आये, दुनियादार आये, चले गये।

राना राव न को रहे रंग न तंग फकीर ।
वारी आपो अपनी कोई न बान्धे धीर ।।

न बादशाह रहे, न रय्यत रही, न दुनियादार रहे, न वली अवतार रहे। जो आये सब गये। जब जब उनकी बारी आई, जब तक लेने देने का हिसाब रहा, ''लेखे सास ग्रास,'' स्वांस

और खाना-पीना, लेना-देना खत्म हुआ, सब चलते बने। बस। तो हमने भी जाना है। जब शरीर भी हमारे साथ नहीं जाता, तो इसके ताल्लुकात आपके साथ कैसे जायेंगे ? Gain (फायदा) तो जरूर हुआ, मगर यह Gain ऐसा Gain है, जो हमेशा रहने वाला नहीं है। परम अर्थ नहीं। तो हम परम अर्थ की तलाश में है। हम बुद्धि के पहलवान बन गये, शरीर तीन ही चीजों का बना है। इन्सान मुरक्कब है तीन चीजों का। यह जिसम (शरीर) रखता है, बुद्धि रखता है, और आत्मा रखता है। शरीर करके तो यह कैफियत है, इसके ताल्लुकात करके, और भी दूरी है। वह भी Gain कोई Gain नहीं, जीते जी छूट जाते हैं सब। पाकिस्तान में सब कुछ हम छोड़ आये। सामने हैं। मरते तो सब ही छोड़ जाते हैं। तो बाहरी सामान भी मिल गये, यह परम अर्थ नहीं है। जिसम जिसमानियत के लिहाज से आप रुस्तम बन गये, सैन्डो बन गये, आखर फिर भी छोड़ना पड़ा। तो यह भी Lasting (हमेशा रहने वाले) न रहे। अर्थ जरूर है, हर एक की अपनी अपनी, Value of life हैं। बाहिर की चीजों को हासिल किया। यह तो बरतने के लिये मिली थी। शरीर भी एक Means of the end (साधन) है। बड़ा एक Golden opportunity (सुनेहरी मौका) है जो हमको मिला, मनुष्य जीवन। जितनी योनिया हैं, उनमें यह सरदार योनी है। समझे ! इसमें फजीलत (महत्व) क्या है ? कि इसमें यह (मनुष्य) अपने आपको प्रभु के साथ जोड़ सकता है। पहले अपने आपको जाने, तब जोड़े ना ! जब शरीर का रूप ही बना बैठा है तो जोड़ने का सवाल ही कहाँ है ? तो Comparative values हैं। यह जो रहने वाला है ना हमारा अपना आप, इसको जानना, यह परम अर्थ है। यह Lasting है। हमारी कैफियत क्या है ? आत्मा चेतन स्वरूप है, Conscious entity हैं। यह मन के आधीन होकर इन्द्रियों के घाट पर जिसम का और दुनिया का रूप बनी बैठी है, अपने आपको भूल चुकी है, परमात्मा, Overself को भूल चुकी है। अपने आपकी होश आये तब हो ना। वह परमात्मा जो इसका Overself है, जिसका आधार इसको मिल रहा है, जिसके आधार पर यह हमारा जिसम चल रहा है, सारा जगत चल रहा है, उसको तब यह जाने जब यह अपने आपको जाने ।

कहो नानक बिन आपा चीन्हे, मिटे न भ्रम की काई ।

भ्रम किसको कहते हैं ? भ्रम एक ऐसी चीज का नाम है जो असल में चीज कुछ और हो और नजर कुछ और आये। इसी का नाम भ्रम है। यह शरीर है, यह हमेशा रहने वाला नहीं है, मगर हम इसका रूप बने हैं, यही समझते हैं कि कभी मौत आनी ही नहीं है। यही भ्रम है। जगत बदल रहा है, Matter is changing मगर हमें स्थिर भास रहा है, जब यह अपने आप को Analyse करके अनुभव करता है। इसीलिये जब जब महात्मा आये हैं, वे सभी इसी बात

पर जोर देते रहे कि अपने आपको जानो कि तुम कौन हो। Know thyself तो अपने आपको जानना, यह हम मनुष्य जीवन में कर सकते हैं Analyse अपने आप को करके, और फिर जब अपने आपको जानेंगे तो फिर Overself के जानने के काबिल होगा क्योंकि परमात्मा को तो जानना आत्मा ने है ना, न मन ने, न इन्द्रियों ने, न प्राणों ने। अब Comparative values सामने आ गई ना। What does it profit a man if he gains prossession of the whole word and loses his own soul. अगर आपको सब कुछ मिला और आपने अपनी जिन्दगी की Mystery (भेद) को हल नहीं किया Who you are, what you are ? तब तक You are nowhere (तुम्हारा कहीं ठिकाना नहीं) क्योंकि आखिर वह वक्त आना है जब कि आपने इस जिसम को छोड़ना है। छोड़ना अवश्य है No exception to the rule दुनिया में Eviction order (छोड़ने का नोटिस) हो जाये तो हो सकता है उसमें कुछ Delay (देर) हो जाये, हो सकता है कि वह Postpone (मुलतावी) भी हो जाये, मगर जब परमात्मा की दरगाह से Eviction order issue होता है ना, सबको सिर नीचा करके जाना पड़ता है। जब जाना ही है अरे भई जानो किसने जाना है ? तुम्हारा सम्बन्ध इस जिसम से क्या है ? दुनिया से क्या है ! परमात्मा से क्या ? इस बात का हल जो है, यह परम अर्थ है ।

दुनिया में देखिये आप, अगर Accident (दुर्घटना) हो जाये तो क्या करते हो ? बड़ी आला पोशाक, बड़ी कीमती, वह फट जाये तो क्या कहते हो ? फिकर न करो, मैं बच गया। समझे ! कहीं और Accident हो जाये, टांग बाजू टूट जाये कहते हो फिकर न करो मैं बच गया ! याने जिसम ज्यादा कीमती है। Is not body more than the raiment and life more that the meat. हमारा अपना आप या आत्मा कहो, जिसम से ज्यादा कीमती है, और जिसम बाहरी चीजों से ज्यादा कीमती है। बीमार हो जाये, कहता है खर्च कर दो, जो है सब लगा दो, बैंकों से निकाल दो, जायदाद बेच दो, मैं बच जाऊंगा। समझे ! तो Accident में जिसम भी टूट जाये तो कहता है कोई फिकर नहीं, मैं बच गया, तो हमारा अपना आप ज्यादा कीमती है। हम तो इस तरफ इस पहलू से देख रहे हैं दुनिया को, और दूसरी तरफ से अनगहल (अनभिज्ञ) हैं। कर वही रहे हैं।

जो चलना सो स्थिर कर माने, जो होवन सो दूर पराने ।

जो हमेशा रहने वाला है, उसको परे परे करता है ।

छोड़ जाये तिस का श्रम करे, संग सहाई तिस पर हरे ।

जो चीज यहां छोड़ जानी है, चौबीस घंटे उसी पुरुषार्थ में लगा है, और जो संगी और साथी है, उसकी तरफ तवज्जो ही नहीं है।

प्राणी तू आया लाहा लैण ।
लगा कित कुफक्कड़े सब मुकदी चली रैण ।

ऐ प्राणधारी इन्सान तू दुनिया में आया था इससे Profit (लाभ) उठाने के लिये, तू किन फजूल कामों में लग गया। Comparative values (जो कीमत जिस चीज की है वह कीमत उसको देने) का सवाल है। अन्त समय जब आता है, आपकी कौन मदद कर सकता है ? न भाई कर सकता है मुआफ करना, न बहिन, न स्त्री, न माता, न पिता। वह सब उसी लाइलमी में जा रहे हैं। उन्होंने खुद इस Mystery (भेद) को हल नहीं किया, आपको कैसे मदद कर सकते हैं ? तो यह एक ऐसी चीज है जो हम सबके सामने एक सी है। यह Man problem है। यहां कौमों, मजहबों, समाजों का सवाल नहीं। परमात्मा ने इन्सान बनाये। इन्सान नाम है आत्मा देहधारी का। हम सब आत्मा हैं ।

कहो कबीर इह राम की अंश

परमात्मा All- consciousness का, चेतनता का, समुन्दर है, हमारी आत्मा भी चेतन है A drop of the ocean of live (उस चेतनता के समुद्र की बूंद) है। यह भी Conscious entity (चेतन स्वरूप) है, यह मन और इन्द्रियों से घिरी पड़ी है, अपने आपको भूल चुकी है, परमात्मा को भूल चुकी है, बीमारी यही है हर एक इन्सान को, चाहे आप किसी समाज में हो। समाजें आत्मा देह धारियों की बनी हुई हैं भई। सन्तों का नजरिया आत्मा के Level से है, इसीलिये क्या काम उनका हमेशा से रहा है ? इसकी तारीफ दी है, बताया है कि अनुभवी पुरुष की क्या रहनी सहनी और बरताव होता है ।

सतगुरु ऐसा जानिये जो सबसे लये मिलाय जियो ।

जो सबको मिला कर बैठता है। वह सामाजिक गुरु नहीं याद रखो, वह जगत गुरु है। He is the child of light. वह नूर का बच्चा होता है, जब आता है दुनिया की रौशनी दे जाता है। समझे ! उनका नजरिया (दृष्टिकोण) कुछ और ही होता है। जो जिसम जिसमानियत या Social की, Sociality कह दो, उसकी रंगन में रंगे हैं, वह खाली शकलों की नजर से देखते हैं, यह सिख है, यह हिन्दू है, यह मुसलमान है, यह ईसाई है। अरे भई यह तो हमने बनाये हैं, परमात्मा ने तो कोई मुहरें लगा कर नहीं भेजा कि अरे भाई तुम कौन हो। परमात्मा ने तो आत्मा देहधारी बनाये हैं। आत्मा की जाति वही है जो परमात्मा की जाति है, बात तो यह है।

मानुष की जात सबे ऐके पहिचानिबो ।

मानुष जाति सब एक है। दसवें गुरु साहब से पूछा गया कि महाराज सिख कौन है ? तो कहने लगे बड़ा अच्छा किया पूछ लिया। कहने लगे मेरी नज़र में तो सारा जहान ही सिख है।

उनका नज़रिया देखिये। पूछा महाराज यह कैसे ? कहते हैं बच्चा पैदा होने से लेकर मरने तक कुछ न कुछ शिक्षा धारण ही करता है। जो शिक्षा को धारण करे वह सिख। कितना विशाल नजरिया (दृष्टिकोण) है अनुभवी पुरुषों का, पूर्ण पुरुषों का। कहते हैं हां उसको गुरु सिख बनना चाहिये । गुरु किसको कहते हैं ? किसी अनुभवी पुरुष को जिसने इस Mystery of life को हल किया है, परमात्मा का अनुभव कर रहा है, ऐसी हस्ती का नाम है गुरु, गा-रु, जो अंधेरे में प्रकाश करे, उस परमात्मा की ज्योति के दिखाने वाला हो, उसका नाम है गुरु, साधु या सन्त या पूर्ण पुरुष। So-called (तथाकथित) गुरु नहीं जो आज बट्टा उठाओ तो हजारों गुरु मिलते हैं। ना भई। तो गुरु सिख बनना चाहिये, यह दसवें गुरु साहब का नज़रिया है, गुरु नानक साहब का नज़रिया वही है। फरमाते हैं, क्या ?

आई पन्थी सगल जमाती मन जीते जग जीत ।

योगियों में बातचीत हो रही थी, उन्होंने पूछा महाराज सबसे बड़ा पन्थ, बड़ा मज़हब कौन है ? कहते हैं (गुरु नानक साहब) सबसे बड़ा पन्थ यही है कि हम सब एक ही जमात में पढ़ रहे हैं। जमात में हर एक किसम के आदमी होते हैं कि नहीं हरेक समाज के, हर एक मुल्क के।

मैं अमेरिका में गया। वहां Louisville University में Talk दी। वहां पर International relations की Class थी। उसमें हर एक मुल्क के आदमी हैं। तो एक ही, हम सब एक जमात में पढ़ रहे हैं, ऐसा जानना, यह एक सबसे बड़ा मज़हब है। वहां तंगदिली नहीं रहती, तंग नजरी नहीं रहती, आत्मा के Level से इन्सान देखता है। तो यह है नजरिया अनुभवी पुरुषों का। अब यह As a man problem है (सबको यह सवाल हल करना है) इसमें से हमने परम अर्थ को पाना है। सवाल तो यही है ना। तो परम अर्थ का पाना, आत्म अनुभव करना, अपने आपका अनुभव करना Mystery of life को हल करना, वह चीज, वह ताकत कहो, जो जिसम को चला रही है, जो जुदा होती है उसको जानना है वह कौन है Analyse करना है अब ही। How to rise above body-consciousness ? अर्थात् जीते जी इस जिस्म से कैसे ऊपर आ सकते हैं ? आपने हल कर लिया तो यह Lasting चीज है। तुम्हारे साथ रहेगी। जिसम रहे यह टूटे, कोई फिकर नहीं। अब जिनका यह नजरिया बन चुका है, वह दुनिया को किसी और Level से देखते हैं। हम दुनिया को जिसम के Level से देख रहे हैं, शरीर का रूप बने बैठे हैं। अनुभवी पुरुषों की बाणियां हमें पुकार-पुकार कर कहती है, अरे भई यह जगत असत्य है।

मिथ्या तन धन कुटुम्ब सभाया । मिथ्या हौमे ममता माया ।

क्या मतलब ? हमेशा रहने वाला नहीं, Lasting नहीं। जो चीज Changing (बदलने

वाली) है, उसके साथ दिल लगाने का क्या मतलब ? वह आखर उखड़ेगी, तुम्हारी नजर से ओझल होगी। या तुम छोड़ जाओगे। जब तुम्हारी सुरत, जो अब उसमें लीन है, उसका रूप बनी बैठी है, उससे उखड़ेगी, दुखी हो जाओगे। समझे ! तो जिन्होंने इस अनुभव को पाया है, उनका नजरिया कुछ और है। जो जिसम और जिसमानियत के रूप बने बैठे हैं, उनका नजरिया कुछ और है। वही चीजें जो सत्य हैं, हमको असत्य भास रही हैं। शास्त्र कहते हैं, आत्मा सत्य है, जगत असत्य है। असत्य से मुराद Changing एक रस न रहने वाला। हम देखते हैं, भई देखते भी हैं,मगर हैरानी की बात है ऐसे जिसम हमने खुद कन्धों पर उठाये, शमशान भूमि में पहुंचा कर अपने हाथों से दाग दिये (जला दिये) हैं, मगर हमें यकीन नहीं आता है कि हमने भी जाना है।

फरीदा कित्थे गये तेरे मां पियो जिनी तू जणयोई ।
ओ किस पासे लद गये तूं अजे न पतियोई ॥

तेरे देखते देखते, तेरे सामने चले गये, तुझे अभी भी यकीन नहीं। तुम भी भई ऐसे ही जिस्म रखते हो। उसमें और तुममें फरक क्या है ? उसके चलाने वाला निकल गया, तुममें है। बस।

तिंच्चर बसे सहेलड़ी जिच्चर साथी नाल ।

इस जिसम की सहेली उस वक्त तक आबाद है जब तक इसका साथी इसके साथ है। वह कौन है? तुम हो खुद ! तुम न रामसिंह हो, न रामनाथ हो, न मिस्टर खान हो, न मिस्टर गनी हो, न मिस्टर स्मिथ हो। तुम आत्मा हो। देह से सम्बन्ध है देह का, अलग-अलग नाम रख दिये गये, समाजों के मुताबिक। अरे भई हो तो तुम वही, इसी को हल करना, इसी का अनुभव करना, इसी को Analyse करके देखना, Experience करना, इसका नाम परम अर्थ है, थोड़े लफ्जों में। अब यह आदर्श सबके सामने एक सा है। मैं अभी अर्ज कर रहा था कि हम इस धोखे में जा रहे हैं कि यह हमेशा रहने वाली चीज है, मगर असल में है नहीं। आंखों से भी देखते हैं, ग्रन्थ-पोथियां पढ़ते हैं, महात्माओं के कलाम पढ़ते हैं, सब यही कहते हैं।

कहां सो भाई मीत है देख नैन पसार ।

अरे भई आंखें खोल कर देख कहां के भाई, कहां के बन्धु, कहां के मित्र हैं -

एक चाले, एक चालसी सबको अपनी बार ।

सब जा रहे हैं। हमने भी जाना है। सवाल तो यह है। तो इस Changing panorama (बदलते दृश्य) में Lasting चीज कौन है ? उस का अनुभव करने का नाम परम-अर्थ है। इसी, का नाम परमार्थ है। इसी का नाम मजहब है। इसी का नाम धर्म है। जिसने इस चीज को

हल नहीं किया, बाहरी किसी समाज में है उसका जन्म व्यर्थ गया। समाज में रहना यह एक बरकत है,क्योंकि मनुष्य सामाजिक जीव है Man is social एक समाज बदलेगा दूसरी धारण करेगा, दूसरी बदलेगा तीसरी धारण करेगा। अरे भाई फिर भी समाजों के बदलने से यह Mystery हल नहीं होती। यह Mystery किसी समाज में रहो वहीं हल हो सकती है। और महापुरुषों ने की है। हर एक समाज में महापुरुष हुए हैं। यह परम अर्थ किसी एक समाज या दूसरी समाज या एक मुल्क या दूसरे मुल्क का कोई Reserved right (इजारा) नहीं।

रविदासजी चमार थे। कबीर साहब जुलाहे थे। फिर ! गुरु साहिबान खत्री थे। तुलसी साहब ब्राह्मण थे। ब्राह्मण, खत्री,हमने बनाये हैं ना भाई। परमात्मा ने तो आत्मा देहधारी बनाये। तो किसी समाज में भी हो, तुमने इस मुईम्मे (पहेली) को हल करना है। जिसने हल कर लिया उसका जीवन सफल हो गया। क्योंकि मनुष्य जीवन में ही हम इस परम अर्थ को पा सकते हैं, और किसी योनी में नहीं। इसमें (मनुष्य जन्म में) तुम्हारे अन्तर विवेक, आकाश तत्व प्रबल है, तुम असत्य और सत्य का निर्णय कर सकते हो सत्य को ग्रहण कर सकते हो, और असत्य से मुंह मोड़ सकते हो। रविदासजी से लोगों ने कहा, अरे भई तुम चमार हो। तो कहने लगे -

ओ बापन नाहीं किसी को, भावन को हरि राजा ।

क्या वह किसी के बाप ने मोल लिया हुआ है ? जो भाव भक्ति से उसको याद करे, वह उसी का है, जो भी अनुभव कर ले। कबीर साहब को जब ब्राह्मणों ने कहा कि हम ऊंची जात के हैं, तो बोले अरे भई ठीक है। फिर कहने लगे - बाज वक्त यह बड़े लाधड़क भी कह देते हैं। तो बोले –

जो तू ब्राह्मण तू ब्राह्मणी जाया। आन बाट काहे नहीं आया ॥

कोई और तरीका पैदा होने का अखत्यार करना था भई। तो परमात्मा की तरफ से सबको एक जैसे हकूक (अधिकार) हैं। जिसका मुंह उस तरफ होगा उस हकीकत को पा जायेगा। जिसको किसी ऐसी हस्ती से वास्ता पड़ेगा जिसने परम-अर्थ को पाया है, आपको उसका अनुभव करा देगा। जो ऐसी हस्ती हो, उसी का नाम साधु, सन्त और महात्मा है। आगे यहां पर आप को पता है यह एक साझी धरती है। यहां पर किसी एक समाज या दूसरी समाज की रंगन नहीं दी गई है। इसका यह मतलब नहीं कि हमारे दिल में समाजों के लिये इज्जत नहीं है। मैंने अभी अर्ज किया था, किसी समाज में रहना एक बरकत है, नहीं तो Corruption हो जायेगी। तो उसमें रह कर जब तक हम उस हकीकत को पाते नहीं, इस Mystery of life को हल करते नहीं, तब तक हमारा मनुष्य-जीवन पाना बेकार होगा। अब जिन्होंने आत्म अनुभव को पाया है और जिन्होंने नहीं पाया। हमारी नजर से तो सब सत्य है, ठीक है। देखते

हैं तो भी, जैसे होता है ना एक कपड़ा हो, उस पर कुछ चिकनाहट लग जाये, उस पर अगर पानी डालो, एक कतरा नही ठहरता चिकनाहट के सबब से। तो हमारे अन्तर दुनिया की सत्यता का ख्याल, इसकी चिकनाहट कहो, इतनी दिल दिमाग में लग चुकी है कि देखते हैं आंखों से, मगर यकीन नहीं आता है, पढ़ते हैं, कोई असर नहीं। यह भूल क्यों हो रही है ? सवाल यह है। कारण यह है, कि यह शरीर या जिसम Matter (जड़ तत्व) का बना हुआ है। सारा जगत भी Matter का बना हुआ है And matter is changing (यह Matter जो है यह बदल रही है) एक ही रफ्तार से यह शरीर और यह जगत, दोनों बदल रहे हैं। जब तक दोनों चीजें एक ही रफ्तार से चल रही हो और हम एक का रूप बने बैठे हों, तो हमें दोनों खड़ी मालूम होती है। मिसाल के तौर पर एक बेड़ी है। उसमें पांच छः आदमी जा रहे हैं, और बेड़ी उस तरफ जा रही है जिधर कि दरिया बह रहा है। अब उनमें से एक आदमी बेड़ी से बाहर निकल खड़ा होता है। वह देखता है बेड़ी भी बह रही है, पानी भी बह रहा है । वह हमदर्दी से पुकारता है, अरे भाईयों तुम बह रहे हो। वह कहते हैं, अरे भई तुम क्या कहते हो, हम तो खड़े हैं। देखो पानी भी खड़ा है और हम भी खड़े हैं। क्योंकि दोनों एक ही रफ्तार में जा रहे हैं। यह है भूल जिसमें सब पड़े हुए हैं, अमीर गरीब सब इस भूल में जा रहे हैं। तो सन्त महात्मा क्या कहते हैं ? Self-analysis करो (जड़ से चेतन को अलेहदा करो) Learn to die so that you many begin to live. जिस्म को एक दिन छोड़ना है, अब छोड़ना सीखो। अब हम जिसम का रूप बन के जिस्म के Level से देख रहे हैं। सब कुछ बदल रहा है, हमको मालूम नहीं होता है। जब आप इससे ऊपर आओगे तुम आत्मा के Level से देखोगे कि सब बदल रहा है।

कभी हम जब महात्माओं की बाणियां पढ़ते हैं तो कहते हैं, अरे भई यह क्या कहता है ? हम खाते-पीते ऐश करते हैं। यह क्या कह रहा है ? असल में नजरिये (दृष्टिकोण) का फरक है वह महात्मा Self-analysis (आत्म पद को चीन्हने) अनुभव पाकर देख रहे हैं सब Change हो रहा है,उनकी देखने वाली आँख, बरताव का तरीका बदल जाता है। अगर आप रोज पिण्ड को छोड़ने लग जाओ तो आप आत्मा के Level से देखोगे ना। तो कहते हैं भई -

नानक जीवन्देयां मर रहिये ।

अरे भई जीते जी मरना सीखो -

मरने ते सब जग डरे जीवया लोड़े सब कोय ।

गुरु अमरदास जी साहब की बाणी है कि मरने से सारा जहान भयभीत हो रहा है, हर एक यही चाहता है कि मैं दो सांस और ले लूं , क्यों ? Beyond (जिस्म से परे) का पता ही नहीं?

''गुरु परसादी जीवत मरे तां हुक्मे बूझे कोय ॥

अगर किसी अनुभवी पुरूष की कृपा से यह जीते जी मरना जो है, इसको Practically कर ले तो ''हुक्मे बुझे कोय'' उस मालिक के हुक्म को बूझने वाला हो जायेगा। Conscious coworker of the Divine Plan बन जायेगा। वह देखेगा, यह वह कर रहा है, मैं नहीं कर रहा। उसके अन्तर अनुभव खुलेगा। जो खुलेगा उसकी निशानी क्या है भई ? जपजी साहब में गुरु नानक ने फरमाया है -

नानक हुक्में जे बुझे तां हौंमैं कहे ना कोये ।

वह कहता है वह कर रहा है। वह देखता है उसकी वह आँख बन गई। क्योंकि जिसम-जिस्मानियत से ऊपर आ गया है। उस Power को काम करते देखता है इसलिये कहता है-

मेरा क्या किछ न होय। जो हर भावे सो होय ॥

यह अनुभवी पुरुषों की बातें हैं ।

गले हमारे जेवड़ी जैं खैचे तैं जाओ ।

यह कबीर साहब कहते हैं, गुरु नानक साहब कहते हैं -

''नानक ऐसी मरनी जो मरे तां सद जीवन होय''

यह जो जीते जी मरने का राज़ (भेद) गुरु की कृपा से जो मिले तो हमेशा की जिन्दगी को पा जायेगा जिन्दा जावेद हस्ती (अमर जीवन प्राप्त पुरुष) हो जायेगा। यह है अब Comparative values आपके सामने आ गई कि नहीं। जिनका नजरिया यह बन गया वह देख रहे हैं आत्मा के Level से। वह कहते हैं यह बेचारे सारे ही भूल में जा रहे हैं समझे ! कबीर साहब कहते हैं -

या जग अन्धा एक दो होये उन्हें समझाऊं ।

सारा जहान ही अन्धा है, अरे भई मैं क्या करूं ? एक दो हों तो उनको समझाया जाये। जिधर देखो यही हाल है। पढ़े भी, अनपढ़ भी, अमीर भी, गरीब भी, महकूम भी, हाकिम भी, एक ही भूल में जा रहे हैं, और अपनी भूल के जोम में (अकड़ में) हैं कि हम ठीक हैं। गुरु नानक साहब कहते हैं, यह बेचारे अन्धे हैं। और गुरुबाणी में अन्धे की तारीफ की है -

अन्धे से न अंखियन जिन मुख लोह नांहि ।

अन्धा उनको नहीं कहा जाता जिनके चेहरे पर आंखें नहीं हैं। बल्कि अन्धे वह लोग हैं जो ''खसमों कुत्थे जान'' जो मालिक से टूट रहे हैं, अनुभव नहीं है जिनको, जो देख नहीं रहे हैं।

नानक का बादशाह दिस्से जाहिरा ।

वह तो देख रहे हैं ना। कहते हैं वह कौन सी आंख देखती है ? फरमाते हैं -

नानक से अखिडियां बे अन्न, जिन दिसन्डो मापरी ।

वह कहते हैं कि वह आंखें और हैं भई जिन से वह मालिक नजर आता है। वह चमड़े की आंख नहीं ना। वह, वह आंख है जिसको हम दिव्य चक्षु कहते हैं, जिसको शिव नेत्र कहते हैं, Third eye कहते हैं, Single eye ईसाई लोग कहते हैं। If thine eye be single thy whole being shall be full of light. भगवान कृष्णजी ने गीता में फरमाया है, कि तुम मुझको इन चमड़े की आंखों से नहीं देख सकते बल्कि उस दिव्य चक्षु से जो मैंने तुमको बख्शी है। गुरु वह आंख देता है। तो उनका नजरिया आप देखिये कितना Different (अलग) है। अब उनकी नजर से दुनिया का क्या हाल है ? यहां पर हर एक महापुरुष की बाणी ली जाती है, सिर्फ यह बतलाने के लिये कि आदर्श Man problem को (सब मनुष्य जाति के सामने, एक ही सवाल है) हल करना है, सवाल एक है, उसका अनुभव करना एक है, प्रभु के पाने का जो तजरूबा है वह भी एक ही है। Parrallel run करता है, सिर्फ तरीका बयान अपना अपना है, जबांदानी अपनी अपनी है, नफ्से मजमून वही है जिस तरह डॉक्टरी साईंस एक जैसी है सब मनुष्य जाति के लिये। जिसम की साईंस है ना, इसी तरह आत्मा की साईंस जो है, वह भी सबके लिये एक जैसी रही है, और रहेगी, बदली नहीं।

तो यहां पर हमारा ताल्लुक केवल आत्मविद्या से है,आत्मअनुभव से है। इसीलिये यहां पर कई भाई आते हैं पूछते हैं, अरे भई कौन सा मन्दिर बनाया है ? मैं कहता हूं भई यही शरीर हरि मन्दिर है जो तुम लिये फिर रहे हो, जिसमें सच्चे की ज्योति, उस परमात्मा की ज्योति, जगमगा रही है। क्या हम उस ज्योति को देखते हैं कि नहीं ? सवाल तो यह है। सबकी आंखें बन्द है। दसवें गुरु साहब ने फरमाया है, कि खालसा कौन है ? हम बाणियां पढ़ छोड़ते हैं, कभी बिचारते नहीं। सब महापुरुषों की बाणियां एक ही बात कहती है। वह क्या कहते हैं ?

पूरण ज्योति जगे घट में, तब खालिस तांहि नखालिस जानो ।

जिसके अन्तर पूरण ज्योति का विकास हो गया, प्रभु की ज्योति जगमगा गई, नजर आने लग गई, उसका नाम है खालसा। कितने खालसे हैं भई ? हम पांव धोने को तैयार हैं। Unalloyed (विकार रहित) जो है। खालसा के मायने हैं, Pure (पवित्र) Unalloyed, जिस में मन इन्द्रियों की आलायश (मैल) नहीं, अनुभव को पा चुका है। वह क्या देखता है? उस (प्रभु की ज्योति को देखता है) यह मुसलमान की तारीफ दी है कि मुसलमान कौन है सच्चा, जो कोहे तूर पर चढ़ कर, कोहे तूर पहाड़ है यह जिसम की पहाड़ी है, आत्मा दो आंखों के पीछे रहती है ना। जो खुदा के नूर को देखता है, उसका नाम मुसलमान है। बात तो वही कहो ना। ईसाई की भी यही तारीफ दी, जो Light of God को देखता है, वह ईसाई है। हिन्दू की भी यही तारीफ दी है, जो परमात्मा की ज्योति को देखता है। अरे भई जो ज्योति को देखता है, वही हिन्दू, सिख, मुसलमान सच्चे मायनों में बैठे हैं, देखने वाली बात यह है।

जिसकी अपनी आंख नहीं खुली, वह तुम्हारी कैसे खोलेगा ? बड़ी मोटी बात है। तो तत्वदर्शी, आत्म अनुभवी पुरुष की सोहबत में तुम भी उस अनुभव को पा सकते हो। वैसे ही आलिम आपको इल्म दे सकता है, डॉक्टर आपको जिसम की साईंस सिखला सकता है, इंजीनियर आपको इंजीनियरिंग का काम सिखा सकता है, भई आत्म अनुभवी, जिसने आत्मा का अनुभव किया है, Self analysis किया है, जीते जी पिण्ड से ऊपर आने में माहिर हुआ है, वही तुमको इससे ऊपर आने का तजरूबा करायेगा, एक बार तुमको कर दे Way-up (रस्ता खोल दे) फिर चलो रोज ।

मरिये तो मर जाइये फूट पड़े संसार ।

यह कबीर साहब कहते हैं, आगे फरमाते हैं -

कबीर ऐसी मरनी जो मरे, दिन में सौ सौ बार ॥

सौ सौ बार At will अर्थात् जब चाहो बैठो और आ जाओ ऊपर, इस महारत का हासल करना, Mystery of life को हल करना है। उसकी देखने वाली आंख दुनिया की बदल जायेगी। तो आगे यहां हर एक महापुरुष की बाणी ली जाती है। कई भाई कह रहे थे कि फरीद साहब की बाणी कभी नहीं ली। चलो भई आज फरीद साहब की बाणी लो। एक ही बात है। अनुभवी पुरुष सब एक ही बात कहते हैं। सौ सयाने एक ही मत। जिस नजरिये से हम देख रहे हैं, वह अपनी नजर से देख रहे हैं, वही बयान करेंगे। फरीद साहब अच्छे अनुभवी पूर्ण पुरुष थे। उनकी बाणी गुरु अर्जुन साहब ने दाखल भी की है। उन्होंने सब अनुभवी पुरुषों की बाणी जो उनको मिल सकी एकत्र की, जो नहीं मिल सकी, वह अलेहदा बात रही। तो उनकी जात के मुतल्लक आता है कि वह खलीफा उमर की सन्तान में से थे। उन्होंने अपनी मुरशिद से तालीम हासिल की, कुतबुदीन उनका नाम था। कुतबुदीन बख्तयार अनुभवी पुरुष थे, अनुभव पाया। अमीर आदमी थे। उनकी शादी नासिरूद्दीन, दिल्ली के जो बादशाह थे, उनकी लड़की से उनकी शादी हुई थी। भाई अनुभव ख्वाहे अमीर को आ जाये, ख्वाहे गरीब को आ जाये, सवाल तो एक है ना, तो उनकी बाणी बड़ी त्याग की भरी हुई है। हरेक महात्मा का जीवन त्याग का ही होता है। जब त्याग न हो, दिली त्याग है ना, तो जब जिसम से ऊपर आ गये, दिल से त्याग हो, दिली त्याग हो गया ना। जिसम की Attachment (लगन) रही, न ताल्लुकात की रही, इसको एक बरतने की मशीन समझ कर बड़ा Best use करता है, मगर उसका अनुभवी का, कुछ और नजरिया रहता है। तो उन्होंने बड़े दर्द भरे सादा लफ्जों में बयान किया है हकीकत को। सवाल अनुभव का है। अनुभवी पुरुष हो। अगर इल्म से आरास्ता (विद्वान) है तो यह इल्म उसके गले में फूलों का हार है। एक चीज को कई तरीकों से खोल-खोल कर समझायेगा। नहीं तो Environments (अपने आस पास के हालात) से मिसालें लेकर जो Vocabulary उसके पास है (जितना भाषा

ज्ञान है) उसी से खोल खोल कर समझा देगा। वही कहेगा। आज एटम बम का युग है, लोग एटम की मिसालें दे कर समझायेंगे, उस वक्त ऐटम बम नहीं थे, उन्होंने गिर्दा गिर्द के हालात से समझा दिया। मतलब तो यह है कि थोड़ी सी बात जहां सब महात्मा उससे मुतफिक (सहमत) हैं वह यही है कि दुनिया में रह कर जिसका प्यार प्रभु से हो गया उसके जीवन की कल्याण हो गई। परमात्मा प्रेम है, आत्मा उसकी अंश है। यह भी प्रेम का स्वरूप है। समझे ! इसका खासा (गुण) है कहीं न कहीं लग कर रहेगी, Innate ना, जातियत के लिहाज से। अब यह जिसम के साथ लगी पड़ी है, ताल्लुकात के साथ लगी पड़ी है, यह Lasting नहीं (हमेशा रहने वाले नहीं) आखर उखड़ेगी, दुःखी हो जायगी। अगर इसका ताल्लुक ऐसी चीज से लग जाये जो फ़ना (नाश) से रहित है, तो हमेशा के सुख को पा जाये।

जो सुख को चाहे सदा, सरण राम की ले ।

जो रम रहा परमात्मा है उसके साथ लगे -

ना ओ मरे ना होवे सोग ।

हम लोग दुःखी क्यों हैं ?

नदरी आवे ता स्यों मोह । अब क्यों मिलिये प्रभु अविनासी तोह ॥

कि हे प्रभु ! जो कुछ हमको नजर आ रहा है, उससे हमारी यह Attachment बनी है। हम नाशवान चीजों में लग रहे हैं, तू अविनाशी है, तेरे से कैसे बने ? तो प्यार के Change करने इसके रूख को बदलने का सवाल है। अगर यह मन के अधीन हो, इन्द्रियों के भोगों रसों में लम्पट होगी, तो दुनियादार बन गया। अगर यह इधर से हट कर आत्म-अनुभव को पा गई, तो रूहानी पुरुष बन गया, हमेशा के जीवन को पा गये। तो थोड़े लफ्जों में फरमाया -

दिलों मोहब्बत जिनसे ही सच्चे ।

जिनके अन्तर दिल में प्रभु के लिये प्यार बन गया वही सच्चे हैं नहीं तो -

जिस मन होर मुख होर से काढे कच्चे ।

जिनके मन के अन्तर और हैं, जबान से कुछ और कह रहे हैं, कहते हैं, वह कच्चे हैं, आखर निकाल दिये जायेंगे ।

कच पकाई उथे पार

कच्चे और पक्के वहां तो निर्णय कर लिये जायेंगे। यहां हम एक दूसरे को धोखा दे सकते हैं, यह चमड़े का गिलाफ ऊपर चढ़ा है, हमको नजर नहीं आता। अगर Magnify हो तो देखेंगे तुम कैसे हो ? अनुभवी पुरुष की आँख Yogic होती है, वह देखता है कि इसके अन्तर क्या भरा पड़ा है। हमारे हजूर (बाबा सावनसिंहजी महाराज) फरमाया करते थे कि एक आदमी जब आता है, वह ऐसे साफ मालूम होता है, जैसे एक शीशे की बोतल हो बीच में

अचार पड़ा है या मुरब्बा वह देख लेता है, मगर वह परदा पोश है, वह धोने की करता है। तो जिनके अन्तर सच्चा दिल से प्यार है प्रभु के साथ, उनका मनुष्य जीवन सफल हो गया। हमारे अन्तर प्रभु का प्यार नहीं मुआफ करना। बहुत कम। अगर कोई थोड़ा बहुत हमें नजर भी आता है तो वह किसलिये है? दुनिया के पाने के लिये। आप धर्म स्थानों में जाओ जाकर गौर से, प्यार से सबसे पूछो, ज्यादातर लोग आपको ऐसे मिलेंगे जो कहेंगे महाराज बच्चा बीमार है, यह राजी हो जाये, हमारी रोजी नहीं चलती, यह खुल जाये, फलाना काम मुश्किल है यह हल हो जाये। दुनिया के लिये एक मददगार चीज समझ कर हम उसको याद कर रहे हैं। तो सच्चे मायनों में हम उसको याद कर रहे हैं। तो सच्चे मायनों में हम पुजारी किसके हुए?दुनिया के, ना कि उस (प्रभु) के। तो जो दुनिया के पुजारी हैं वह बार-बार दुनिया में आयेंगे ।

जहां आसा तहां बासा ।

अब देखिये नजरिया में कितना फर्क है ? एक ने आत्म अनुभव को पाया है, वह आत्मा के Level से दुनिया को देख रहा है, यह सारी चीजों की Value कुछ और बन रही है। एक आदमी का अनुभव नहीं खुला, वह जिसम के Level से यह सब कुछ, यही दीन ईमान समझ रहा है। एक के दिल में प्रभु की याद इतनी समा गई कि दुनिया उसमें हवन हो गई। एक के दिल में ऐसी दुनिया की याद समा गई कि प्रभु का ख्याल हवन हो गया। यही फरक है मनमुख और गुरुमुख में। खैर इस वक्त आपके सामने फरीद साहब के कुछ थोड़े श्लोक रखे जाते हैं। गौर से सुनिये कि यह महापुरुष क्या कहते हैं। बात एक ही कहेंगे। हमारी Values of life का सवाल है। इसमें ज्यादा आत्म-तत्व के ज्ञान के मुतल्लिक तो जिकर नहीं होगा, मगर ताहम True import of life (जीवन के उद्देश्य)जिन्दगी की क्या कीमत है, इसका बहुत सारा नजरिया मिलेगा। इसी का पहला कदम है। हमने समझना है। अगर यह समझ आ जाये तो फिर हर एक इन्सान कुछ न कुछ करेगा।

जित दिहाड़े धनवरी साहे लये लिखाये ।
मालिक जे कन्नी सुणींदा मुंह देखाले आये ॥

गुरुबाणी में जहां कहीं भी शुरु किया है ना, वहां ''एक ऊंकार सतगुरु प्रसाद'' से शुरु किया है। वह मालिक एक है, उसी का यह सब पसारा है, उसी का यह ज़हूर (प्रकटीकरण) समझो, इजहार समझो, Expression समझो, मगर एक की भी फिर और तारीफ की है। एक भी तो मितना (मापना) है ना। कबीर साहब ने कहा, -

एक कहूं तो है नहीं दो कहूं तो गार । जैसा है तैसा रहे कह कबीर बिचार ॥

कहते हैं एक कहूं तो एक मितना हुआ ना। हम तो Finite terms (सीमाओं से घिरी

परिभाषा) में बयान कर रहे हैं। कहते हैं एक भी नहीं, क्योंकि गिनती में आ गया ना, वह तो एक का भी आधार है। कहते हैं अगर मैं दो कहता हूं, तो गाली के देने के बराबर है। कहते हैं फिर वह कैसा है ? कहते हैं कुछ है अपने आपमें, कायम-बिलजात (स्वयंस्थित) जो बयान में नहीं आ सकता। जैसा है वैसा ही है। गुरुबाणी में भी इसका निर्णय किया है ।

इस एके का जाने भेव । सोई करता सोई देव ॥

कि जिसको हम एक करके बयान कर रहे हैं ना, कहते हैं इसके भेव (राज़, भेद) को जो जान जाये,सबका जो आधार है, जिसे हम एक कह कर Express कर रहे हैं (बोध करा रहे हैं) उसको (करन कारण, आधार ताकत को) जो जान जाये वह प्रभु का रूप बन जाता है। कहते हैं फिर तुम ''एक'' करके क्यों बयान करते हो ? फरमाते हैं खुद, बाणी में बड़ा हर एक महापुरुष ने निर्णय किया है इन बातों का ।

तूं बेअन्त हौं मित कर बरणं, क्या जानां होय कैसो रे ।

तू तो बेअन्त है, हम अन्त में हैं, Finite हैं, इसलिये Finite terms में (हदों की, सीमाबद्ध परिभाषा) में बयान करके समझना-समझाना चाहते हैं और तो बात कुछ नहीं। तू तो बेअन्त है। तो कहते हैं, वह जो हस्ती जिसको हम एक कहकर Express (बयान) करते हैं, वह सत्गुरु की कृपा से मिलता है। जिन्होंने अनुभव किया है, उनकी सोहबत से मिलेगा। वह अनुभव करायेंगे, कब ? इन्द्रियों के घाट से ऊपर ला कर। हम इस वक्त इन्द्रियों के घाट पर बैठे हैं। आप देखिये यह एक Practical (करनी का) मजमून है। पढ़ने-लिखने का ही खाली मजमून नहीं Theory precedes practice. करनी से पहले सिद्धान्त है,मगर जो Theory है (सिद्धान्त है) उसका अनुभव करना है, जिसको हम ''एक'' शब्द से बयान कर रहे हैं, उसका Contact (परिचय) करना है। वह एक नहीं। तो कहते हैं, उस ज़ाते हक (प्रभु अविनाशी) का अनुभव, सत स्वरूप हस्ती से, सत्गुरु से मिलेगा। सत्गुरु किसको कहते हैं?

सत्गुरु सत्स्वरूप है ।

जो सत का स्वरूप हो गया है। गुरु अर्जुन साहब ने सत्गुरु की तारीफ की है -

सत्पुरुष जिन जानियां, सत्गुरु तिस का नांव ।

जिसने सत्पुरुष सत् नाम को जान लिया है, उसका नाम सत्गुरु -

तिन के संग सिख उधरे, नानक हर गुण गाओ,

ऐसी हस्ती जिसने अनुभव किया है, जो सत् का स्वरूप हो गया है, Mouthpiece of God उसकी संगत में सिख का उद्धार हो सकता है, वह सच्चे मायनों में प्रभु का गुणावाद गा सकता है। क्यों ? हम तो पढ़े-पढ़ाये गाते हैं ना, सुने-सुनाये ही गाते हैं। वह तो देख कर गाता है।

जब देखा तो गावा, तो गावे का फल पावा ।

वैसे तो किस्से हम पढ़ने वाले हैं, सुने सुनाये कर देते हैं। हीर रांझे के किस्से गाते रहे, इसका मतलब नहीं कि आप लोग न पढ़ो। इसका मतलब हकीकत के अनुभव से है। सन्तों की बाणी के लिये इसीलिये कहा कि -

सुन सन्तन की साची साखी । सो बोले जो पेखें आखी ।।

सन्तों की शहादत को सुनो, वह सच्ची है, क्योंकि वह सब कुछ बयान करते हैं, जो कुछ उन्होंने अपनी आंखों से देखा है, देख रहे हैं। तो देखा हुआ बयान Convicing होगा कि नहीं। तो कहते हैं वह देख रहे हैं, वह ऐसी हस्ती का प्रसाद है। जपजी साहब में पहिली पौड़ी में कहते हैं, ''एक ओंकार'' से शुरु किया, एक से शुरू किया है। वह पीछे रह गया जो लाबयान है। आगे एक की, Into being (इजहार में आई ताकत) की तारीफ़ दे रहे हैं, ''सत्गुरु प्रसाद'' और आखिर कहते हैं -

सतनाम, करता पुरुष, निरभौउ, निरबैर,
अकाल मूरत अजूनी, सहभंग गुरु प्रसाद, जप।

तो अनुभवी पुरुष का यह प्रसाद है, अनुभव, First-hand experience तो यहीं जहां कहीं गुरुबाणी में शुरू में आया है ना, शब्द या श्लोक, तो पहिले ''एक ओंकार सत्गुरु प्रसाद'' यहां से। फिर अब फरीद साहब के श्लोक शुरु होंगे। गौर से सुनिये वह क्या कहते हैं -

जित दिहाड़े धनवरी साहे लये लिखाये।
मलिक जे कन्नीं सुणींदा मुंह देखाले आये ।।

फरीद साहब कहते हैं भई जिस हमारी आत्मा को प्रभु के घर जाना है, पिण्ड को छोड़ना है, उसने हमको ब्याह कर काल ने ले जाना है, वह पहिले ही दिन का लिख दिया गया है, Destined है।

लेखे सास ग्रास ।

वह पहिले ही दिन है कि इतने सांस लेने हैं, इतना लेना-देना है। जब खत्म होता है, जाना पड़ता है। कहते हैं जिस दिन धनवरी ने हमें ब्याह कर ले जाना है, वह लिखा गया है, Destined है। कोई आदमी दो दिन पहिले नहीं मर सकता, दो दिन पीछे नहीं मर सकता। जितने सांस लेने हैं उसके मुताबिक हमारा जीवन है। अब स्वांसों का जायज और नाजायज इस्तेमाल रह गया, अगर आप साधारण, हर रोज देखेंगे, जो सांस लेता है, एक मिन्ट में कोई चौदह बार सांस लेता है। अगर Passionate जीवन (विषय विकार का जीवन) है ना,

कामी, क्रोधी, अन्तर में लोभ का कुत्ता हौंकता फिरता है, उसके सांस जल्दी चलते हैं, एक मिनट में कोई चौबीस,पच्चीस सांस जायेंगे। अगर आपका संयम का जीवन है तो एक मिनट में चार पांच स्वांस जायेंगे। अब आप समझे, कहते हैं ना पाप से उमर घटती है, उसका मतलब यही है। जितना Normal (साधारण, शान्त, स्थिर) जीवन होगा, एक रस जीवन होगा, उतने ही स्वांस कम होंगे,उतनी आयु लम्बी हो जायेगी। अगर आप प्राण-योग करेंगे, स्वांसों का कुम्भक कर लेंगे, एक स्वांस चढ़ा कर बैठे रहो दो साल । एक आदमी को मुझे मिलने का इत्तिफाक हुआ जो दो दो साल का कुम्भक करता था। उन्नीस सौ इक्कीस 1921 की बात है। उसकी उमर कोई एक सौ पच्चीस साल की थी, उसकी आंखें इतनी तेज थी, रात की चांदनी में पढ़ता था। मेरे से कुछ डेढ़ फुट ऊंचा ही था। वह कहता था दो-दो साल का कुम्भक कर के बैठे रहो, उतने स्वांस कम खर्च होंगे, उतनी हजारों साल आयु होगी। और क्या है, तिब्बत के पहाड़ी पर आप देखोगे वहां बड़ी बड़ी आयु के लोग मिलते हैं, हजार-हजार के। तो नीचे मैदानों में मिल जाते हैं। कहते हैं इससे उमर के और ऊपर हैं। मुझे चार लामाओं को उपदेश देने का इत्तफाक हुआ है, दो को बम्बई देवलाली में, और दो को अमेरिका में। तो आयु को हम बढ़ा सकते हैं, या कम कर सकते हैं। अगर बड़ी हो भी जाये तो इसकी क्या Value (कीमत) है ? गुरु नानक साहब ने तो इसकी कोई Value नहीं दी, और वाकई है भी नहीं। जो मनुष्य जीवन का आदेश है, प्रभु अनुभव को पाना, अगर वह नही पाया, एक आदमी लाख वर्ष जीये तो क्या ?

जे जुग चार आरजा होर दसूनी होय ।
नवा खण्डां बिच जाणियें नाल चले सब कोय ॥
चंगा नांव रखाय के जस कीर्त जग लेय ।
जे तिस नदर न आवई ताँ बात न पुछे कोय ॥

क्या Value है, जो प्रभु की दरगाह में उसकी मंजूरी नहीं,रसाई नहीं हुई। लाखों वर्ष जिया तो क्या है ? तो फरीद साहब कहते हैं, अरे भाई जब तुम्हारा इस जिसम से मुकलावा होगा ना, तुम्हारी डोली ले चलेंगे, वह पहिले दिन लिख दिया, Difinite (पक्का निश्चित) अब उसका Right (ठीक) और Wrong (गलत) Use (इस्तेमाल, प्रयोग) करना रह गया। फिर आगे क्या फरमाते हैं फरीद साहब, ''जित दिहाड़े धनवरी सोह लये लिखाय। मालिक जे कन्नि सुणींदा ते मुंह दिखाले आय।'' कहते हैं मलकुलमौत (यमराज) का तुम सुनते रहे थे, वह सामने आ खड़े हैं, चल भई आगे हो। अभी तो सुन रहे हो ना मौत आती है,फरिश्ता आता है, या यमदूत आता है, कहते हैं वह सामने आ खड़ा होता है, चलो भाई। इसकी आंखे खड़ी हो जाती हैं। बस। Drop scene होता है, चलो। अगर हमने मरना नहीं

मौत से पहिले, तो फिर मौत से क्या खौफ है? देखिये आदमियों को, देखने में आया, कि चालीस-चालीस गोली लगी और नहीं मरे, टांगों में, बाजू में, आगे पीछे। इधर पांव फिसलता है, मर जाता है। गुसलखाने में जाता है, वहीं दम चित्त सो जाता है। रात सोते-सोते मर जाता है। तो कहते हैं कितनी Uncertain life है मैं अर्ज कर रहा हूं। अनुभवी पुरुष क्यों डरते नहीं ? भई जब जाना है, तैयार है।और जो जाने का सवाल है वह हल कर लिया है।

जिस मरने ते जग डरे मेरे मन आनन्द ।
मरने ही ते पाइये पूर्ण परमानन्द ।।

जिससे दुनिया भयभीत हो रही है, उसका नाम सुनकर उसे खुशी हासिल होती है। मौलाना रूम साहब थे, उनका अन्त समय आया, अपने ख्याल में महव (लीन) है। कुछ फकीर बीमार-पुरसी को आ गये। दुआ (प्रार्थना) करने लगे कि हे खुदा ! इनको शफा दो। आंख खोली, कहने लगे, अरे भई यह शफा तुमको मुबारक रहे। मेरे और उस प्रभु के दरमियान में एक यह जिसम एक परदा था आगे, तो फिर आना पड़ता था। अब यह हमेशा के लिये टूटने वाला है यह परदा। तुम यह नहीं चाहते कि मैं हमेशा के लिये उसमें वासिल (लय) हो जाऊं ? उनका नजरिया देखिये, हमारा देखिये, हाय, हाय गये यह क्या होगा, बच्चों को कौन संभालेगा, हाय मैं किधर जाऊंगा। अनुभव पा कर, लोग पूछते हैं कि क्या फायदा है ? भई वह कदम उठाता है, मुतमईन (शान्त, स्थिर) हो कर चलता है।

गुरु तेगबाहादुर साहब थे। पटने से चले। लोगों ने पूछा कि महाराज कहां से आ रहे हो ? कहने लगे यह जिसम का ठीकरा ज़ालम के सिर फोड़ने जा रहा हूं। समझे ! Definite पता है ना, मैं जा रहा हूं, टूटना है, रोज तोड़ कर जाता है। अनुभवी पुरुषों की हम बाणी पढ़ लेते हैं, विचारते नहीं उसमें दिया क्या कुछ है। अनुभव की बातें है उनकी रसाई के नजरिये से। जो देख रहे हैं वह बयान करते हैं। तो बड़े प्यार से कह रहे हैं कि अरे भई जब जाना है वह तो पहिले दिन ही लिखा गया है। जब वक्त आयेगा, जिसके मुतल्लिक अब तुम सुन रहे हो, मौत आती है, यमराज आते हैं, मलकुलौत आता है, सुन रहे हो, फिर सामने आते हैं, चल भई आगे हो। कोई भाई वहां मदद नहीं कर सकता है। जिसने Mystery of life को हल किया है, जिसने जीते जी उसका अनुभव, प्रभु को पाया है, अरे भाई वहां मलकुलमौत (यमराज) क्या कर सकता है ? वह मौत पर भी फतह (विजय) पा सकते हैं। सेन्ट पाल ने कहा, आखरी दुश्मन जिस पर हमने फतह पानी है, वह मौत है। जो इस मुइम्मे (पहेली) को हल कर गये, उनको मौत का क्या खौफ है ? यही फतह का पाना है। मरते वह भी हैं, और मरते दुनियादार भी हैं, दोनों के मरने में फर्क है कि नहीं ? समझे ! बड़ा भारी फर्क है। बिल्ली चूहे को मुंह में ले जा रही है, उसकी भी मौत हो रही है। बिल्ली अपना बच्चा भी अपने मुंह में लिये जा रही है।

फरक है कि नहीं ? तो Mystery of Life को हल करना है, जीते जी मरने को पाना, बड़ा मुतमईन (चैन का) जीवन बन जाता है ।

मुझे याद है, कि मैं आपको अर्ज करुं, मुझे मिलने कई भाई आये जब मैं Service (नौकरी) में था, कि आप अपना बीमा कर लो। मैंने कहा भई मैंने जिन्दगी का बीमा तो करा लिया है महात्माओं के हाथ, मौत का बीमा करने आये हो, दस साल के अन्तर मर जाओगे तो पूरा रुपया मिल जायेगा, भाई मैं किसी का रुपया नहीं लेना चाहता, मुझे पता है मैंने काम करना है। तो अनुभव प्रभु की दया से हर एक को हो सकता है, As a man (मनुष्य होने के नाते) हर एक को Equal rights (समान अधिकार) हैं। यह नहीं कि एक के लिये खास Facility है, दूसरे के लिये नहीं। जो करे वह पायेगा। There is hope for everybody (सबके लिये उम्मीद का दरवाजा खुला है) बड़ी (पक्की) बात है कि मतमईन इन्सान रहता है। सबसे बड़ी बात । यह नही कहता वह कि हाय ! मौत आयेगी तो मर जायेंगे, हाय क्या होगा ? वह कहता है, मौत आई तो चलो भाई, बताओ यहां कौन से लड्डु पड़े हैं। उसने ऊपर की जिन्दगी को देख लिया है। All beauty and glory lies within you खुशी खुशी जाता है। यहां अगर काशमीर या कहीं और अच्छी जगह हो तो आप का चित्त जाता है कि नहीं, एक बार देखा हो तो यहां मैदानों में जो गर्मी में तड़प रहे हैं, यहां क्या पड़ा है ? वह कहता है चलना है, तो वह कहता है हां चलो भई। यहां तो वह अपनी कैद समझता है। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं -

जित दिहाड़े धनवरी साहे लये लिखाये ।
मालिक जे कन्नीं सुणिदां मुह देखाले आये ।
जिन्द निमांणीं कढिये हड्डां कूं कड़काये ।
साहे लिखे न चलनी जिन्दू कू समझाये ।।

कहते हैं, जब अन्त समय आयेगा, आत्मा जिसम से जुदा होगी, उस वक्त क्या हालत होगी ? क्योंकि हमने निकलना सीखा नहीं ना। जो निकलना सीख गये Body consciousness से ऊपर आना, At will (अपनी इच्छा से) सीख गये, उनको मौत का क्या डर ? वह रोज जाते हैं ।

गुरुमुख आये जाये निसंग ।

जो नहीं सीखे, रूह सिमटने में तकलीफ होती है, दर्द होता है। आपने मरते आदमी देखे हैं कोई टांगे मारते हैं, कोई बाजू मारते हैं, कभी चेहरा टेढ़ा होता है, कभी सीधा होता है, कभी आँख ऊंची होती है,कभी नीची होती है। घिड़कता है। भाई बन्धु पास खड़े हैं, कुछ नहीं कर सकते, डॉक्टर खड़े हैं, कुछ नहीं कर सकते हैं In last hour (अन्त समय) क्या है यह वह

घिड़क रहा है,कौन मदद कर सकता है ? देखो कितनी जरूरी मजमून है, इस Mystery (भेद) को जीते जी हल करना। अगर हम पिण्ड से ऊपर आना सीख जायें जीतेजी, मौत का ख़ौफ न रहे। इसी के हल करने का नाम परमार्थ है। सब महापुरुषों ने इसका जिकर किया है। कहते हैं निमाणीं जिन्द को हड्डियों को कड़का कड़का कर निकालते हैं। रची परी है ना लूंलूं में (रोम रोम मे) निकलना नहीं सीखा ना। अन्त समय एकाएक Switch फिरता है ना, Withdraw होती है ना, उसमें तकलीफ होती है। Saint Plutarch ने कहा कि आत्मा को जो अन्त समय जिसम से निकलते हुए तजरूबा करती है, वैसे ही जो Mystery of life में Initiate किये जाते हैं, वह वैसा ही तजरूबा जिन्दगी में करते हैं। कोई नई बात नहीं। जब से दुनिया बनी हो, जो महापुरुष आये इसी मामले को बयान करते रहे कि किस तरह हल किया उन्होंने इस गुत्थी को। कुरान शरीफ़ में जिकर आता है कि रूह को जिसम से जुदा होते कितनी तकलीफ होती है, कितनी कान्टे वाली झाड़ी, समझे, कान्टेवाली झाड़ी, पाखाने के रास्ते डाल कर मुंह के रास्ते खैंची जाये। अनुमान दिया है। सब जगह आपको जिकर मिलेगा। श्रीमद् भागवत में इस बात का जिकर आया है। वह लिखते हैं कि अन्त समय आत्मा जिसम से जुदा होती है, इतनी तकलीफ होती है, जितना एक हजार बिच्छू इकट्ठा डंक मारे। एक बिच्छू लड़ जाये, कितने कड़वल पड़ते हैं भई। अनुमान दिया है। तो अगर हम इस mystery (भेद) को हल कर लें How to rise above body consciousness (पिण्ड से कैसे ऊपर आ सकते हैं, यह जान जायें) तो काम बन जाये। हमको मौत का ख़ौफ न रहे। तो यही है परम अर्थ। तो कहते हैं कि उनकी क्या कैफियत है ?

जिन्द निमाणीं कढिये हड्डां कूं कड़काय ।

फिर क्या कहते हैं ?

साहे लिखे न चलनी जिन्दू कू समझाय ॥

कहते हैं जो साहा लिखा गया ना, वह कभी टलने वाला नहीं। जब जाना है, तो जरूर जाना है, अवश्य जाना है। कहते हैं अपने आपको समझाओ भई। एक महात्मा नहीं, सब महात्मा यही कहते हैं, Thy days are numbered. (अर्थात् तेरे दुनिया में रहने के दिन गिनती के हैं)

नेपोलियन था, एक शहर का मुहासरा (घेरा) हो रहा था। वह किले की दीवार पर शहर के दरवाजे पर खड़ा हो गया। उसको क्या विश्वास था कि, Thy days are numbered तेरे दिन गिनती के हैं। बेख़ौफ था। उसका एक वज़ीर था गोली इधर से चलती उधर हो जाता, फिर अगर उधर से चलती, उधर होता था। इधर उधर करते करते सिर में गोली लग गई। मौत तो तभी आनी है जब आनी है। मिसाल के तौर पर बयान किया है। हमारी ग़र्ज से ग़र्ज है।

बीमारी थी प्लेग की,किसी शहर में दाखिल हुई। एक फ़क़ीर बैठा था। कहने लगा (प्लेग की बीमारी से) अरे भाई कहां जा रहे हो ? कहता है मैंने यहां तीन सौ आदमी मारने हैं। जब वापस गया, दो चार दिन के बाद, कहने लगा भई तूने तो तीन सौ कहे थे यह तो तीन हजार मर गये। कहता है, बाकी ख़ौफ से मर गये। तो Difinite रहती है, मैं यह अर्ज कर रहा हूं। जाना है तो जाना है। सारे काम अभी Set कर दो, और फिर अगर आप Mystery को हल कर लो तो, Vision clear (दृष्टिकोण साफ़) होता है। तुम जानते हो कि मैंने जाना है। यह भी हल हो जाता है, अगर किसी अनुभवी पुरुष के चरणों में आ गये, वह तुम्हें अन्तर से Guidance देता है। You are going to be prepared (तुम्हारी तैयारी हो जाती है) कितना भारी एहसान है। और फिर अन्त समय कोई तकलीफ नहीं, चुपचाप चला जाता है, घिड़कता नहीं, टांगे नहीं मारता, बाजू नहीं मारता।

जिन्द निमाणीं कड़िये हडां कू कड़काये ।
साहे लिखे न चलणीं जिन्दू कूं समझाये ।।

कहते हैं भाई अपने आपको समझाओ, Foresight से काम लो। मौत कोई हव्वा नहीं It is a change तब्दीली है, अवश्य सबने छोड़ कर जाना है। All beauty and glory lies within you. अन्तर के देश, सूक्ष्म, इससे भी ज्यादा खूबसूरत हैं। तुलसी साहब ने जिकर किया है अपनी बाणी में। फरमाते हैं कि जब मैं ब्राह्मण्ड से आया, पिण्ड में अण्ड, और ऊपर तो मैंने कहा बस यही सब कुछ है। कहते हैं जब मैं ब्रह्माण्ड से ऊपर चढ़ा ना, तो मुझे ब्रह्माण्ड एक मेहतरों की ट्टी मालूम हुई। वह उस रस को पा कर उन नजारों को देख कर कहता। वह जिसम में तो मल-मूत्र का थैला लेता है कर्मों के अनुसार भोगना पड़ता है। महापुरुष लोगों के पर उपकार के वास्ते लेते हैं जिसम में उसे क्या ख़्वाहिश रह जाती है दुनिया की ?

जब ओह रस आवा। एह रस नहीं भावा ।

आप देखिये Life after death (मत्यु के बाद जीवन) एक बड़ी Difinite (निश्चित) चीज़ है जिसका आप अभी (जीतेजी) तजरूबा (अनुभव) कर सकते हो अगर कोई अनुभवी पुरुष मिल जाये ।

जिन्द वौहटी मरण वर लै जासी परणये ।
आपण हत्थी जो लिखे कै गल लै धाये ।।

कहते हैं, हमारी आत्मा है Bride वौहटी, स्त्री और मौत, काल जो है, उससे शादी होगी। वह ले जायेगा। यही जपजी साहब में थोड़ा इशारा दिया है।

काल कुंवारी काया ।

इस काया कुंवारी का काल से मंगेवा (सगाई) हुआ पड़ा है। आखर ले जायेगा। कहते हैं फिर जब अपने हाथ से जिसम से, वह निकलने वाला निकल जाता है, अपने हाथ से भेज देते हो, तो फिर इसको गले लगाने में क्या फायदा है ? हम इसी को अब सब कुछ समझे बैठे हैं ना। मर जाय तो उसके गले लिपटता है। अरे भाई किसके साथ लिपटता है ? लिपटने वाला तो बीच से निकल गया, बाकी तो खाली मकान पड़ा है। असल Angle of vision (ठीक दृष्टिकोण) तो यही है ना। इस जिसम की कीमत इसके साथी से है। हमको वही कशिश (आकर्षित) कर रहा है, हमें खैंच रहा है। जब वही निकल जाता है, जिसम में कशिश कोई नहीं रहती तो कहते हैं जब जिसम से वह चला गया तो तुम किसके साथ गले लग रहे हो भई? चलो फेंको। चार भाई उठाते हैं ।

आध घड़ी कोई न राखत घर ते देत निकार ।

बताओ हमारा, हजरते इन्सान का, यह रोना, है क्या Position (स्थिति) और हम क्या समझ रहे हैं।

जिन्द वौहटी मरण वर लै जासी परणाये ।
आपण हथी जो लिखे कै गल लै धाये ।।
वालों निकी पुलसरात कन्नी न सुणी आये ।
फरीदा किड़ी पवदी, खड़ा न आप मुहाये ।।

ठेट पंजाबी है। कहते हैं, ''बालों निक्की पुलसरात कन्नी न सुणी आये।'' मुसलमान भाईयों में यह ख्याल है, कि दोजख़ की आग जलती है ना, उसके ऊपर एक पुल है, वह बाल से भी बारीक है। कहते हैं उसके मुतल्लिक तुमने सुना था, कानों से सुना था, अब देख रहे हो। जब पिण्ड से रूह निकलती है बड़ी बारीक हो कर निकलेगी, बड़ी मुश्किल से, जैसे एक बारीक सुराख में से एक तार को खैंच कर निकाला जाये। जो दुनिया में फैल रहा है, उसको तकलीफ होती है। Christ (यसू मसीह) ने भी उसका जिकर किया है। वह कहता है,सुई के नाके में से एक Camel का, ऊंट का, गुजरना आसान है मगर एक दुनियादार जिसकी सुरत दुनिया में फैल रही है, उसका गुज़रना मुश्किल है। जो सुरत दुनिया में फैल रही है, खिंचा फिरता है दुनिया में, हाय हाय करता है। जिसकी रूह फैलाव में नहीं, वह आसानी से चला जाता है। मतलब तो सिर्फ इतना है । कहते हैं जिसके मुतल्लिक तुमने सुन रखा था कि पुल सरात है, बारीक है बाल से, वहां गुजरना बड़ा मुश्किल है, अब तुम देख रहे हो। फैलाव में जा रहे, मौत पड़ रही है तुम्हें, ''बालों किड़ी पवदी खड़ा आप मुहाय।'' याने वह जो हस्ती है

ना, आवाजें पड़ रही हैं, ''तलबां पौसन आकियां बाकी जिनां रही।'' यह गुरु नानक साहब ने फरमाया। जैसा जैसा किया है वैसा वैसा हिसाब देना पड़ेगा। जो शान्तचित्त है, किसी का बुरा नहीं किया किसी का हक नहीं मारा, किसी का खून नहीं निचोड़ा, सब के लिये है, नेक पाक रहा, सदाचारी रहा नेहकर्म हो गया, वह खुशी खुशी जाता है। उसकी धर्मराय भी इज्जत करता है। वैसे हिन्दू भाईयों में भी यह ख्याल है कि यमराज आते हैं। एक रामगण आते हैं एक यमगण आते हैं। यम गण तो सजा देते हैं,और राम गण बाइज्जत ले जाते हैं। असल अपने किये का ख्याल वहीं प्रगट होता है।

विष्णु भगवान से पूछा गया कि महाराज आपको बड़ा इन्तेजाम करना पड़ता होगा, दोजखों में बड़ी आगें जलानी पड़ती होगी, स्वर्गो में बड़े सुख के सामान, एशो इशरत के मुहैय्या करने पड़ते (जुटाने पड़ते) होंगे । कहने लगे भई हम कुछ नहीं करते। यह अपनी आग और अपने आराम साथ ले आते हैं। जैसा अन्तर है, यदि अन्तर सबसे प्यार है, शान्ति है, वहां शान्ति के नजारे हैं, सूक्ष्म देश। जो दुनिया में ईर्ष्या, द्वेष की अगन में जल रहे हैं, वहां भी जलेंगे। तो कहते हैं वहां पर जैसा किया है वैसा जवाब देना पड़ेगा ना। तो इसलिये आवाजें बड़ी कड़क (Command) जैसे कचहरियों में आवाज़े पड़ती हैं ना, कौन है ? फलाना ! कहते हैं वहां भी ऐसी डांटे पड़ती है ।

बालों निकी पुल सरात कन्नीं न सुणीं आये ।
फरीदा किड़ी पवंदी खड़ा न आप मुहाये ।।

फरीदा दर दर बैसी गाखड़ी चाले दुनिया भत ।
बन उठाई पोटली किथे वन्जां घत ।।

अब फरीद कहते हैं भई फ़क़ीरी बड़ी मुश्किल है। कहने को सब फकीर हैं, फकीर की तारीफ की है, फ़ाक़ा रखने वाला हो,कनायत वाला हो, यगानगत (एकता भाव) हो, रियाजत हो,चार जाहिरी बाहरी रहनी हैं उसकी, उसका नाम है फकीर। हद और बेहद से जो टप (पार चला) जाये उसका नाम है फकीर। तो कहते हैं, फकीरी बड़ी मुश्किल है। हम दुनिया के रंग में रते पड़े हैं जो दुनिया के रंग में रते पड़े है फकीरी वहां कहां है ? उनके लिये तो बड़ा मुश्किल है। फकीरी नाम है, सब तरफ से हटना, समझे । मिल जाये बहुत अच्छा,न मिले बहुत अच्छा। कनायत (सन्तोष) और सिवाय एक के और किसी पर नजर नहीं जाती है। और जफाक़श होते हैं वह (सख्ती झेलने की आदत है) कहते हैं यह बहुत मुश्किल है। हम दुनिया के रंग में रंगे पड़े हैं। कहने लगे फकीरी अब जब ले ली तो अब इसको निभाना है। जो भेख (वेश) ले लिया उसके मुताबिक जीवन बनाओ। भेख (वेश) का मतलब क्या है ? असल में यह भेख इसलिये बनाये गये थे हमारे अन्तर के जीवन को बाहर लोगों को बतलाने

के लिये कि यह अब ऐसा है। भगवे कपड़े पहन लिये। क्या ? ज्ञान के रंग में रंगे पड़े हैं। मगर इन्द्रियों के रंग में रंगे पड़े हैं। कपड़े बदलने से तो नहीं बनेगा। हर कोई नहीं सन्यास लेता था भई, जो अनुभव को पाता था उनको सन्यास मिलता था। आजकल सब कोई कपड़े रंगे पहन लेते हैं एक रस्म पूरी कर ली, चलो भई यह हो गया। करते क्या हैं ? मैं ऋषिकेश में रहा वहां देखा, दिन को ताशें खेलते हैं। इत्तेफ़ाक एक दफ़ा ऐसा बना, ऊपर से तार आ गई कि गंगा दरिया में सेलाब (बाड़) आ रहा है, पांच पांच फुट छै छै फुट। सब दरिया के किनारे जितने लोग हैं, सब छोड़ जाओ। इत्तेफ़ाक से मैं, वहां एक पत्थर था, दरिया में ऊंचा सा, बीच में बिल्कुल Centre में, वहां मेरा कायदा था, सबसे हट-हटा कर वहां जा बैठना, ताकि कोई न आये, न कोई बात हो। मैं बैठा था, वहां से आये, तो भागे जाये, डंडे, सोटे लिये, सब साधु जितने थे। मैं बीच में बैठा था। अब जो साथ थे मेरे, कहने लगे भई क्या बनेगा, सैलाब आ रहा है, यह तो बह जायेंगे। और वह (साधु) भागे जायें । इत्तेफ़ाक से सैलाब कोई न आया। मगर देखो हमारा त्याग यह है भई आया तो चलने दो। पर नहीं। जानते नहीं।

राजा जनक के वक्त जब वेद व्यास का लड़का गया है ज्ञान पाने के लिये, लम्बा चौड़ा किस्सा है, कई बार गया, कई बार वापस आया। रास्ते में अभाव आया यह बादशाह है, यह विषयी पुरुष है, कई तरह का अभाव आता। कर करके उसकी कला, दस कला थी उसमें सुना है, उसमें से नौ तो नाश हो गई। याद रखो पूर्ण पुरुष पर जब अविश्वास आये ना, तो एक एक कला नाश होती है, दसवीं कला भी चली जाती, रास्ते में अभाव आने का ख्याल आता, नारद मुनि ने देखा इसकी यह दसवी कला भी नाश हो जायेगी। उन्होंने क्या किया बूढ़े आदमी की शकल बना ली। एक पानी का नाला बह रहा था, उसमें मट्टी डालनी शुरू कर दी, एक-एक टोकरी। पास से गुजरा (सुखदेव व्यास का बेटा) भई क्या कर रहे हो ? तो कहने लगे, महाराज मैं पानी को जरा बन्द कर रहा हूं। तो कहने लगे, तुम बड़े बेवकूफ हो। कब से यह कर रहे हो ? कहते हैं मैं सुबह से कर रहा हूं। भई यहां कुछ लकड़ लगाओ, कुछ पत्थर डालो,तब ठहरेगा। कहने लगे कोई बात नहीं, मैं बेवकूफ हूं, मगर मेरी एक दिन की मेहनत जाया (व्यर्थ) गई, मगर मेरे से बढ़कर वेद व्यास का लड़का है, जिसकी नौ कलाऐं तो नाश हो चुकी है, दसवीं भी नाश होने की है, अभाव आने के सबब से, होश आ गई। खैर गये। लम्बा चौड़ा किस्सा है। वह अस्तबल में जा पहुंचे,पिछले रास्ते से गये, कहने लगे कह दो बादशाह को कि वेदव्यास का लड़का आया है। अभी अहंकार है। उन्होंने कहा अच्छा भई खड़ा रहने दो। तीन दिन खड़ा रहा,लीदें घोड़ों की पड़ पड़ कर, कहते हैं कमर तक दब गया। तीसरे दिन पूछा कि भई वेदव्यास का लड़का खड़ा है ? ! हां महाराज खड़ा है। बुलाओ उसको ! बुलाया, नहलाया धुलाया, ले गये। उन्होंने थोड़ा सा करिश्मा (चमत्कार) दिखला दिया, कि एक लात आग में थी, एक लात पर रानियां चन्दन मल ही थी। देखा तो कहा, है तो भई कोई महात्मा, कमाई

वाला। खैर, वह अन्दर ले गये, बातचीत होने लगी। इतने में एक आदमी आया, कहने लगा महाराज शहर को आग लग गई। कहने लगे हरि इच्छा। दुबारा आदमी आया कि महाराज मुहल्ले तक आग पहुंच गई। कहने लगे हरि इच्छा। तीसरी बार आदमी आया कि महाराज इस महलों में आग लग गई। कहते हैं हरि इच्छा । इतने में उस कमरे में शोले आने लगे जिसमे वह बैठे थे। वेद व्यास का लड़का था, उसके पास झोली डंडा था। उसको लेकर भागने लगा। बाजू पकड़ लिया, अरे भई ! मेरा शहर नाश हो गया, महल नाश हो गये, मैं हरि इच्छा कहता हूं और तू अच्छा त्यागी है जो झोली डंडा लिये भाग रहा है। फकीरी बड़ी मुश्किल है। समझे! हर एक किसम का त्याग किसी किसी का काम है। कहते हैं, अब ले लिया यह भेष, इसको निभाना होगा। हम जाहिरदारी तो ले लेते हैं, अन्तर में दुनियां में रंगे रहते हैं। बताओ यह फकीरी किस बात की ? We must be sincere to our own self (अपने आपके सामने तो सच्चे रहो, अपने को धोखा न दो) जैसे हैं वैसे बात बतलाओ। आप देखिये जितने भेष हैं ना, यहां चेहरे पर तीन निशान लगाते हैं, कई एक, दो, तीन इसका मतलब है कि भई यहां तक हमने रसाई की है। यह चिन्ह था बाहर तो दिखलाने के लिये ताकि हमें देखने से पता लगे कि यह कहां तक पहुंचा है ? वैसे दो घन्टे तो इन चिन्ह चक्रों के लगाने में लगेंगे, जिसम से ऊपर जाना नहीं आया, बताओ किस काम का है भई ! तो कहते हैं फकीरी अगर ली है तो उसको निभाओ। यह धर्म है। त्यागी हो तो पूरा त्याग करो, गृहस्ती हो तो पूरा दुनियादार, सबसे प्यार हो, Self expand करे, सबसे प्यार सबके काम आओ। सब के अन्तर परमात्मा है। इसका नाम गृहस्ती है, गृहस्ती का यह काम नहीं दो बच्चे ले कर पालता रहे सारी उमर। यह भी है मगर और खुदी ने फैलना है ।

ग्रहस्तन में तू बड़ो ग्रहस्ती ।

यह तारीफ की है परमात्मा की। यह सब एक Family (परिवार) है ना। तो कहते हैं फकीरी बड़ी मुश्किल है। उनके लिये जो दुनियां में रंगे पड़े हैं। कहते हैं अब तो फकीरी ले ली है, निभानी होगी ।

फरीदा दर दर बैसी गाखड़ी चले दुनियां भत ।
बन उठाई पोटली किथे बन्जां घत ।।

और इसको, अब फकीरी को छोड़ कर कहां जायें। अखत्यार जो कर लिया, अब निभाना चाहिये ।

किज न बुझे किज ना सुझे दुनियां गुज्जी भा ।
सांई मेरे चगा कीता नही तां हम भी दज्जां आ ।।

कहते हैं अब कुछ सूझता नहीं, बूझता नहीं, कहते हैं अब क्या किया जाये ? दुनिया तो एक गुज्जी भा-गुज्जी भा से मुराद गुप्त आग है जिसमें सब दुनिया जल रही है।

गुज्जी भा जले संसार ।

यह माया की जो अग्नि है -

जैसी अगन उदर में तसी बाहर माया ।

सब दुनिया- अब तुम चुपचाप बैठो अन्दर धुंकन जैसी उठ रही है। यह किनको नजर आई? जिनकी आंख खुली है, जिन्होंने देखा इस आग जलती को, दुनिया के लोग जल रहे हैं। गुरु नानक साहब ने पुकार की कि हे परमात्मा -

जगत जलन्दा रखले प्रभु आपन कृपा धार ।

दुनिया आग में जल रही है, कृपा करके रख लो। किस तरह ? कहते हैं -

जित द्वारे उबरे तित ही लेवो उभार ॥

जिस तरह से यह उभर सकते हैं, आप दया करके इनको बचाओ। सब दुनिया जल रही है। यह जलती आग किसको मालूम होती है ? किसी अनुभवी पुरुष को। बात तो यह है। तो कहते हैं अच्छा हुआ मैं फकीर बना, नहीं तो मैं भी दुनिया की तरह जल जाता। दुनिया तो जल ही रही है। मैं भी उन्हीं की तरह जल जाता । दुनिया में कोई कोई सरसब्ज (हराभरा) दरख्त बाकी है नहीं तो सभी जल रहे हैं। गुरुबाणी में जिकर आया है कि विरला, कहीं कोई एक-आध दरख्त (हरा-भरा) है, कोई महात्मा, अनुभवी पुरुष, बाकी सब जल रहे हैं। आलिम (विद्वान) भी जल रहे हैं बेइल्म भी जल रहे हैं अमीर गरीब सब एक ही बात है। जो इन्द्रियों के घाट में, माया में हैं, वह सब जलेंगे। कहते हैं अच्छा हुआ कि हम फकीरी को पा गये। इसलिये हम बच गये, नहीं तो हम भी जल जाते ।

किज न बुझे किज न, सुझे दुनियां गुज्जी भा ।
साई मेरे चंगा कीता, नहीं तां हम भी दज्जां आ ॥

नहीं तो मैं भी उसी तरह जल जाता जैसे दुनियां जल रही है ।

फरीदा जे जांणां तिल थोरडे संभल बुक भरी ।
जे जांणा शौह नेरड़ा ता थोड़ा माण करी ॥

फरमाते हैं तिल, कहते हैं यह मुझे मालूम होता कि तिल थोड़े हैं, तो मैं जरा छोटे-छोटे बुक भरता, मुराद क्या कि यह स्वांस जो हैं यह तिल हैं। यह मालूम होता, मेरे स्वांस गिने हुये हैं, मैं बहुत फिजूल खर्ची नहीं करता इसको, संयम से जीवन गुजारता। यह मुझे मालूम होता कि थोड़े स्वांस हैं मैं तो इसका Right use करता। कहते हैं जो मुझे मालूम होता कि वह परमात्मा बाल सुभाव है,क्या, वह चतुराइयों को पसन्द नहीं करता, वह-

भोले भाव मिले रघु राया ।

तो मैं भी जरा होश में काम करता, मगर मैं चतुराइयों में रता रहा, दिखावे में रता रहा,

लोगों को Acting posing करता रहा, आप धोखे में पड़ता रहा, दुनिया को धोखा देता रहा। अरे भई हम दुनिया को तो धोखा दे सकते हैं उस प्रभु को कैसे धोखा दे सकते हैं ?

लोग पतीने कछ न होवई नाहिं राम अयाना ।

लोगों के पतियाने से, खुश करने से कुछ नहीं होगा, वह राम कोई बच्चा नहीं जिसको तुम धोखा दे सको। कहते हैं वह तो बाल सुभाव है, चतुराई को पसंद नहीं करता।

चतुराई ना चतर भुज पाइये ।

चतुराईयों से वह नहीं मिलता -

जे जांणां लड़ छिन्जड़ा पीडी पाई गण्ड ।
तैं जेवड मैं नाहीं को सब जग डिठा हण्ड ॥

ठेठ पन्जाबी है। कहते हैं जो यह मुझे मालूम होता कि यह दुनिया का ताल्लुक छिन्ज जाना है, टूट जाना है,मिट जाना है, तो मैं किसी मजबूत चीज से गांठ लगाता, ऐसी चीज से जो छिन्जने वाली न होती ।

जे जाणाँ लड छिन्जड़ा पीडी पाई गण्ड ।
तैं जेवड मैं नाहीं को सब जग डिठा हण्ड ॥

कहते हैं कि मैंने दुनियां का तजरूबा करके देखा है, हण्डा के देखा, कि यह सब चीज हमेशा के रहने वाली नहीं है। कहते हैं यह अगर मुझे मालूम होता तो मैं किसी मजबूत चीज से गांठ लगाता। इससे दिल न लगता।

साईं दा की पावणां इदरों पटणां ते उदर लावणां ।

परमात्मा का तो पाना यही है, Attachment है, रहेगी कुदरती खासा है। किसी ऐसी चीज से लौ लगाओ जो फ़ना (नाश) से रहित हो। बात तो इतनी है। वह सिवाय परमात्मा के और नहीं, या जिनमें परमात्मा प्रगट है, वह भी आपकी रसाई, यहां भी कर सकते हैं, मर कर भी कर सकते हैं, बाकी सब जिधर जायेंगे वहीं ले जायेंगे, और कहां ले जायेंगे ?

जहां आसा तहां बासा ।

तो कहते हैं जो मालूम होता कि भई यह हमेशा रहने वाला सिलसिला नहीं है, भई हम देखते हैं मगर At home नहीं हुई ना बात (दिल में बैठी नहीं) अगर आपको यह पता हो कि रात को मैंने जाना है तो बताओ आप दिन को क्या करोगे ? आपका सारा दिन का जो रहन सहन का तरीका है बदल जायेगा कि नहीं ? जाना नहीं ना। बुद्धि, दिमाग तो सुनता है, किताबों में पढ़ते हैं, मगर दिल नहीं मान रहा, At home नहीं हुई बात ।

फरीदा जे तूं अकल लतीफ़ काले लिख न लेख ।
आपनड़े ग्रेवान में सिर निवां कर देख ।।

कहते हैं भाई तुम उस अकेले - कुल के बच्चे हो, तुम को भी सयाना बनना था, अगर तू अकेले लतीफ़ (सूक्ष्म,बुद्धि, विवेक) है, अकेले-कुल (प्रभु सर्वज्ञ) का बच्चा है तो तुझे अकल से काम लेना चाहिये, विवेक से काम लेना चाहिये। यह काले लेख जो दिनों दिन तू लिख रहा है , यह न लिखता, काले लेख क्या हैं ? मन इन्द्रियों के भोगों के रस बाहरी Attachment (लगन) कहीं निन्दा, कहीं चुगली, कहीं नफरत, कहीं Attachment यह सारे काले लेख हैं। कहते हैं यह तू न कर, अगर तू भी सयाना है। कबीर साहब भी कहते हैं कि वह तो अकेले-कुल है, तू उसकी अंश थी, तुझे भी अकल से काम लेना था। महात्मा सब एक ही बात कहते हैं। तो कहते हैं, अरे भाई तू अकले लतीफ़ है, यह काले लेख क्यों लिख रही है ? कहते हैं अपने गरेबान है मुंह डाल तू क्या कर रहा है,देख तो सही यह जो रस्ता तूने अखत्यार किया यह तुमको किस तरफ ले जायेगा ? कभी हमने किया है ? कभी मैं अर्ज करूं, आपको जो आप भाईयों को फिर मैं अर्ज करता हूं बार-बार कि अपनी डायरी रखने के लिये Self-introspection (अपने आपकी पड़ताल) के लिये कहा गया है, उसका कुछ मतलब है। हमारे Daily (रोज) जो ख्यालात अन्तर में उठते हैं, वह अपना रंग दे जाते हैं। Christ कहता है कि Adultery (विषय) का एक बार बुरा ख्याल दिल में आया हुआ वह Adultery के किये के बराबर है, जहर चढ़ जाती है ना। ईर्षा का, द्वेश का, वेग आया, सिर से पैर तक आग जल जाती है। तो कहते हैं यही है जो दाग पर दाग़ लगा रहे हो ।

चुनर मेरी मैली भई मैं कापे जाऊं धुलान ।

यह मैला कर रहे हैं। गुरु नानक साहब ने फरमाया है -

यह तन माया पाया प्यारे लीतड़ा लब रंगाय ।

तन माया में पड़ा है, भूल में। हम जिसम का रूप बन रहे हैं, हैं नहीं जिसम, यह माया है। इन्द्रियों के भोगों रसों के लब लालच में, इसको रंग रखा है। फिर, क्या कहते हैं ?

मेरे कन्त न भावे चोलड़ा प्योर किम धन सेजे जाये ।

ऐसी रूह जिसने ऐसा चोला पहन रखा है, अरे भई वह प्रभु की सेज पर कैसे जा सकती है ? सब महापुरुष एक ही बात कहते हैं। Blessed are the pure in heart for they shall see God. जिनके हृदय पवित्र हैं, वह मुबारक हैं, क्योंकि ऐसे ही हृदय प्रभु को देख सकेंगे Ethical life is stepping-stone to spirituality. सब महापुरुष एक ही बात कहते हैं। तो यही फ़रीद साहब कह रहे हैं -

फ़रीदा ज़े तूं अकल लतीफ काले लिख न लेख ।
ऑपनड़े गिरेवान में सिर निवा कर देख ।।

Self-introspection करो, रोज अपने जीवन की पड़ताल करो, मैं कहां हूं ? मैं क्या कर रहा हूं ? क्या मैं वह कर्म कर रहा हूं जो मुझको अपने और उस प्रभु के अनुभव से दूर ले जा रहे हैं ? जितनी ख़ाहिशात (इच्छायें) हैं, जितने इन्द्रियों के भोगों के रस हैं, यह सब हमें दूर ले जा रहे हैं। अनुभव कब मिलेगा ? ''इन्द्रियां दमन हों, मन खड़ा हो, और बुद्धि भी स्थिर हो तब आत्मा का साक्षातकार होता है।'' अब बताओ हम उस तरफ जा रहे हैं या नहीं। रोज पड़ताल करो। जहां त्रुटियाँ हैं वहां ख्याल करो। फर्ज करो तुम किसी का बुरा चितवन कर रहे हो, फिर द्वैत का आलम (अवस्था) बना कि नहीं ? किसी की दुश्मनी,किसी की बख़ीली, कहीं क्रोध, कहीं गुस्सा, कहीं गाली-गलौज,कहीं धड़ेबन्दी, मैल पर मैल चढ़ रही है। आप सत्य को छोड़ देते हैं, झूठ फरेब, दगा-बाजी, रियाकारी, कपट, चोरी, दिन रात यही सोच रहे हो। यह सारे कर्म, दिनों दिन हमको दूर ले जा रहे हैं अनुभव से। ख्यालात अपवित्र हैं, ब्रह्मचर्य की रक्षा नहीं, फिर ! रंगा पड़ा है सिर से पांव तक ।

मन मैले सब किछ मैला, तन धोते मन अच्छा न हो ।।
यह जगत भरम मुलाया बिरला बूझे को ।।

गुरु अमरदासजी साहब फर्माते हैं, सारा जगत, दुनिया, भूल में जा रही है। अरे भई यह पहिला कदम है। इस तरफ हम तवज्जो ही नहीं दे रहे हैं, इसलिये मैं अर्ज करूंगा फिर, जो डायरी रखने के लिये हर एक भाई और बहिन को ताकीद की है, वह निहायत जरूरी है। बैठो रोज, सोचों मैं क्या कर रहा हूं ? पहिले तो मालूम होगा कोई गुनाह है ही नहीं। फिर, आहिस्ता-आहिस्ता सूझने लगेंगे,दिनों-दिन बढ़ने लगेंगे। वह बढ़ते नहीं होते, आगे ही हैं, उनका हमें ख़्याल नहीं होता। जब बढ़ते बढ़ते आप देखेंगे आप गन्दगी में बैठे हो तो अवश्य निकलना चाहोगे, बुराईयों को आप Eliminate करोगे, निकालोगे। निकलते निकलते, सफाई होगी हृदय की। प्रभु भी नजदीक बनेगा, हर चीज़ खुल जायेगी। परमात्मा का मिलना मुश्किल नहीं है, इन्सान का बनना मुश्किल है। बात तो यह है। परमात्मा ढूंढता फिरता है कोई ऐसा हृदय मिले जो मुझे चाह रहा है। जिधर देखो दुनियां ही चाहने वाले हैं, उसके चाहने वाले कितने लोग हैं? जो उसको चाहते हैं उसको वह जरूर मिलता है, बात तो यह है ।

फरीदा जे तैं मारण मुकिया, तिनाँ न मारे गुम ।
आपनड़े घर जाइये पैर तिनां दे चुम ।।

फरमाते हैं दुनिया में क्या है ? Reaction होता है ना, Retaliation बदला। अगर किसी ने तुमको एक थप्पड़ मारा, कहते हैं उसको वापस थप्पड़ मत करो। क्यों ? वह पहिले

का एक ही का एक या दो हो कर खत्म हो जायेंगे। अगर तुम एक थप्पड़ मारोगे तो वह दो मारेगा। वह दो मारेगा तो तुम तलवार मारोगे, बढ़ जायेगा न हिसाब ? तो कहते हैं अगर तुझे दुःख दे तुम उसको सुख दो। दुःख से तो दुःख बढ़ेगा ।

आवत गाली एक है उलटत भई अनेक ।

अगर एक को नहीं उलटोगे तो वही एक को एक। दुनियां ने रहने सहने का यह एक तरीका है दुनिया में, दुःख को न बढ़ाओ। किसी ने आपको बुरा कहा, चुप कर रहो।

महात्मा बुद्ध थे। एक बात है, जो लोग अनुभवी होते हैं, उनको लोग जो बिचारे नासमझ लोग होते हैं, वह बड़ी मुख़ालफ़त करते हैं। गुरु नानक साहब थे। उनको लोग कुराहिया कहते थे। कसूर के शहर में दाखल नहीं होने दिया। ऐसे महात्मा बुद्ध को, एक साहब आये, गालियां निकालने लगे। शाम का वक्त था। गालियां निकालते अन्धेरा पड़ गया। क्योंकि गुस्से में कुछ होश नहीं रहती ना। जब उसने ज़रा आंख खोली देखा, ओहो ! अन्धेरा हो गया, चलने लगे। कहने लगे (महात्मा बुद्ध) भाई मेरी एक बात सुनते जाओ। कहने लगा हां कहिये, कि भाई एक आदमी सौगात किसी के लिये ले आये अगर वह, लेने वाला, नामन्जूर करे तो किसके पास रहेगी ? कहने लगे उसी के पास, जो लाया है। कहने लगे, आप जो मेरे लिये सौगात लाये हैं, मुझे मंजूर नहीं। देखो ना बचने का तरीका। जाते हुए कहा भई, दीवा ले जाओ, इसको घर छोड़ आओ। हम जो Retaliation करते हैं (बदला लेते हैं) तो उससे दुःख बढ़ता है दुनियां में। गुरुबाणी में आया है ।

गुरुमुख हार चले जग जीता ।

यह हारना नहीं यह जीतना है। एक बुराई को Stem करना है (रोकना है) बढ़ाना नहीं। यही Christ ने कहा, अगर एक आदमी तुम्हारे मुंह पर एक थप्पड़ मारे तो दूसरा गाल भी उस के सामने कर दो। एक मारेगा, फिर उसमें तो शर्म आ जायेगी कि नहीं ? जब तुम गुस्सा करते हो तो फिर और चलता है। तो कहते हैं, अगर कोई तुमसे बुराई करे तो तुम उसका बदला नहीं लो, तुम उसके लिये Good wishes (सद्भावना) भेजो। वहीं रुक जायेगी। बढ़ेगी नहीं, नहीं तो गुस्सा आया, एक ने थप्पड़ मारा, दूसरे ने चाकू मारा, मुकदमा चला, फिर रोते हैं, एक मर गया। यह हाल है। तो दुनिया में रहने का तरीका है। अरे भई दुनिया में यह कहो कि सारे तुम्हारे मद्दाह बनें, तारीफ करने वाले भई, ऐसे तो परमात्मा की भी सब तारीफ नहीं करते, महात्माओं का तो क्या जिकर है, और हमारी तुम्हारी कहां गिनती है। अगर तुमको कोई बुरा नहीं कहता है, उसको तुम बुरा नहीं कहो। तुम हारे नहीं तुम जीत गये। अगर किसी ने बात कही, उससे तुम भड़क उठे, तुम हार गये याद रखो। तुम्हारी जो समझने वाली बुद्धि है, वह खराब हो गई, तुम Right judge नहीं कर सकोगे, नहीं तो अनजान बच्चे भी तो गालियां निकालते हैं। समझे ! एक और मिसाल दी है, एक मिट्टी का बर्तन है। अगर पांव धो दो, तो उस

मिट्टी के बर्तन में तुम पानी पीते हो कभी ? अरे भई एक मिट्टी का बर्तन है इसमें एक गन्दगी का ख्याल आ गया, यह जिसम किस काम का रहा ? क्यों गलाजत में ले जा रहे हो ? हम बाहर दुनिया में किसी के पास जाना चाहते हैं कितने साफ सुथरे कपड़े पहिन कर जाते हैं ? अरे भई हम परमात्मा के चरणों में जाना चाहते हैं, और ग़लाजत से भरे हुए जाते हैं, कैसे परवान होंगे? तो यह एक है Retaliation छोड़ दो, बदला लेना छोड़ दो। एक गाली देता है,चुप करो, प्यार से समझा दो। न समझे, बहुत अच्छा भई, उसके लिये दुआ (प्रार्थना) करो, हे परमात्मा इसको बुद्धि दो।

हजरत इबरहीम का जिकर आया है कि एक दफा एक बेड़ी में जा रहे थे। बेड़ी में लोग सैर करने को जाते हैं। एक धनाडय वहां बैठा था। कई नकाल नकलें करते थे, खुशी हंसी की बातें हो रही थी। यह चुपचाप बैठे थे। नक्कालों का कायदा है, जब सब हंस रहे हो, एक आदमी चुपचाप बैठा हो, उस तरफ तवज्जो दी जाती है। हजरत इब्राहीम की तरफ देखा, उनकी नकलें उतारनी शुरू कर दी। हजरत इब्राहीम लिखते हैं कि उस वक्त खुदा की तरफ से मुझे बशारत (आकाशबाणी) हुई कि ऐ इब्रहीम ! तेरी निरादरी मुझे मन्जूर नहीं। अगर तू कहे तो इस बेड़ी को उलट दिया जाये और इनको डुबो दिया जाये। कहते हैं कि मैंने खुदा से दुआ (प्रार्थना) की ऐ खुदा ! इन बिचारों का क्या कसूर है ? जहल का पर्दा, अविद्या का परर्दा इनकी आंखों के आगे आ रहा है। अगर आपने इतनी दया की है, इनकी आंखों का परदा हटा दो। कहते हैं जब वह परदा हटा, तो वही इब्राहीम से आके मुआफी मांगने लगे। तो Good thoughts (सद्भावना) भेजो Evil (बुराई) के बदले भी। यही इलाज है दुनिया में, नहीं तो दुःख ही दुःख बढ़ेगा और क्या होगा। यह एक गुण धारण करो तो बहुत सारी मुसीबतें घरों की दूर हो जायेंगी। एक, एक कहता है, दूसरा, दूसरा कहता है। चार, छः चलो, निकल जाओ, उसे गुस्से में होश नहीं, पीछे ख्वाहे पछताना ही पड़े ।

फरीदा जे तैं मारण मुकियां तिनां न मारे गुम ।
आपनड़े घर जाइये, पैर तिनां दे चूम ॥

कहते हैं अगर वह तुम्हारे घर आ जाये तो उनके साथ वैसे ही प्यार से काम करो, आवभगत करो, तुम्हारा फर्ज है, तुम्हारे घर आये हैं। दुश्मन भी आ जाये उसकी सेवा करो। Christ से पूछा गया कि भई हमें दुनिया में कैसे बर्ताव करना चाहिये ? कहते हैं Love thy neighbour as thyself सबसे प्यार करो, अपने पड़ोसी से ऐसा प्यार करो जैसा तुम अपने साथ करते हो। सब महात्माओं ने और और ने भी यही कहा कि तुम परमात्मा से प्यार करो,परमात्मा घट घट में है, सबसे प्यार करो। तो कहने लगे कि जी दुशमनों से क्या करना चाहिये ? कहने लगे, Love thy enemies (दुशमनों से भी प्यार करो) हिन्दू भाईयों में गूंगे पीर को दूध पिलाते हैं कि नहीं ? गुगा पीर कौन है ? सांप ! याने ज़हरीले जानवर को भी प्यार

से दूध दो। है तो उसी की (प्रभु की) झलक ना। सब में है। तो यह है नजरिया (दृष्टिकोण) जो घर में तुम्हारे आये उसके पांव चूमो, आओ भाई। भूल जाओ उसने कुछ किया, तुमने तो नहीं किया ना। जब तुम ऐसा करोगे वह खुद बखुद शर्मिन्दा होयेगा। यह Moral effect (सद्भावना का परिणाम) है।

फरीदा जां तो खटण बेय तां तूं रता दुनि स्यों ।
मरग सिवाई निंऊं जां भरिया तां लदिया ।।

फरमाते हैं, ''फरीदा जां तो खटण वेल ताँ तू रता दुनी सियों'' । जो तेरा Profit (लाभ) उठाने का वक्त था, वह तू दुनियां में रत गया। मनुष्य जीवन इसीलिये मिला था ना कि इसमें अपनी आत्मा को परमात्मा से जोड़े, उसके रंग में रंगा जाये। इसकी बजाय तूने क्या किया ? तू दुनिया में रत गया। आत्मा ने रत जाना था परमात्मा में, चेतन ने महाचेतन प्रभु का सुख लेना था, रस लेना था, यह दुनिया के रसों में लग गई। ''जां तू रता, '' जो रतने का वक्त था वह तो दुनिया में गया। कहते हैं यह कबर खोदी जाती है, जब नींव तैयार हो जाती है, तो मुरदे को उसमें ले जाते हैं । अरे भई तेरी कबर तैयार हो रही है, जब वह तैयार हो जायेगी, वक्त पूरा होगा, जाना पड़ेगा। तो यह जब तक तेरा यह वक्त नहीं आता कि जब तुमको चार भाई उस कबर में उतार दें उस वक्त तक तुम अपनी आत्मा को परमात्मा का रस दे दो। दुनिया में मन रंगे जाओ, दुनिया में रंगे जाओगे। आत्मा ने भोग लेना है परमात्मा का। यह चेतन है, चेतन ने महाचेतन प्रभु का भोग लेना था, यह दुनिया के भोगों में लग गई। हम क्यों दुःखी हैं ? एक महापुरुष कहते हैं कि वह चीजें जो हम को बरतने के लिये मिली थी वह हमें भोगने लग गये। जिनका हमने रस लेना था, उनका कभी किताबों में जिकर पढ़ छोड़ते हैं। आत्मा भी चेतन है, इसने महाचेतन प्रभु का रस लेना था, यह इन्द्रियों के भोगों रसों में लम्पट हो गई। इन्द्रियां, जिसम, रुपया, पैसा, जायदादें यह बरतने के लिये थी वह तो भोगने लग गये, न आत्मा की होश, न परमात्मा का रस, जीवन बेकार चला जाता है। जवानी, इसमें प्रभु का रंग लेना था, दुनिया का रंग ले लिया। नतीजा क्या है ? वह कबर भरी जा रही है, तैयार हो रही है तेरे लिये, वह दिन नेड़े (नजदीक) आ रहा है।

नानक नाम संभाल तूं सो दिन नेड़े आयो ।

वह दिन आ रहा है। फरीद साहब कहते हैं एक जगह कि -

गोर निमाणीं सदकड़े निघरिया घर आ।

तुझ को कबर बुला रही है, तैयार हो रही है, बुला रही है, आ भई तू आ। यह तेरा असल घर है। आखर जिसम का मुकाम यही है, "Dust thou art to dust returnest". जिसम तुम्हारा, यह मिट्टी में मिला दिया जायेगा। तुम आत्मा हो, आत्मा को परमात्मा से जोड़ो।

देख फरीदा जो थिया दाढ़ी होई भूर ।
अगों नेड़े आइया पिछा रहिया दूर ॥

कहते हैं आंखों से देख क्या हो रहा है ? देखते देखते तेरी दाढ़ी में सफेद बाल आने लग गये, भूरे रंग के बन गये, क्या ? तू इस उमर को पहुंच गया। होश कर, जाने वाला दिन नजदीक आ रहा है, पीछा (पिछला) दूर हो रहा है। तूने क्या किया ? कभी हमने अपनी पड़ताल की है ? एक बनिया बैठता है ना, मामूली छाबड़ी वाला, वह भी शाम को गिनता है मुझे कितने पैसे बचे हैं ? हम अपना जीवन, किसी को दस साल, किसी को पचास साल हो गये। कभी ख्याल नहीं आया, यह जिसम का कपड़ा पुराना हो रहा है, खिस रहा है, वह दिन नजदीक है जब यह फट जायेगा। अरे भाई इससे तूने फायदा उठाना था। क्या फायदा उठाना है, परम-अर्थ ! Life (जीवन) की Introspection (पड़ताल) करो। महापुरुष हमें Awaken (जागृत) करते हैं। मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा लाभ यही था कि यह प्रभु को पाये, आत्मा को जाने, आत्मा को प्रभु का रस दे। यह था आदर्श, उस तरफ कितने कदम हमने उठाये हैं ? कितने दुःखियों के दर्द दूर किये हैं ? कितने भूखे, नंगे, प्यासों के काम आये हैं ? कितने निरआसराओं के आसरा बने हैं ? कितनों के जख्मों पर मरहम लगाई है ? कभी ख्याल आया है ? फिर किस काम आये आप लोग ? न अपना संवरा, न किसी के काम आये, जीवन बरबाद चला गया। समझे !

देख फरीदा जे थिया शकर होई बिस । साईं बाझों आपणें बेदन कहिये किस ॥

कहते हैं देख, तू आंख खोल कर देख, जिस चीज़ का तो मीठा रस है, वह तो तुझे कड़वा लग रहा है। समझे ! आत्मा ने प्रभु का रस लेना है, इन्द्रियों के भोग रस मीठे मालूम हो रहे हैं। वह रस कड़वा मालूम हो रहा है। क्या कर रहा है होश कर। आखिर इसका नतीजा क्या होगा? यह इस दुःख में तुम जा रहे हो, बताओ इस दुख का इलाज कौन करेगा, कोई समरथ पुरुष करेगा। परमात्मा करेगा या परमात्मा जिस घट में प्रगट है वह करेगा और कौन कर सकता है ? जो खुद ही बीमार है, वह तुम्हारा इलाज क्या कर सकता है ? उस परमात्मा से कहो, वही कुछ सामान करे तो करे, वही कृपा करे तो किसी सत्गुरु को मिलाये ।

कृपा करे तां सतगुरु मेले हर हर नाम धियाई ।

वह नाम के साथ जोड़ेगा, परमात्मा परिपूर्ण घट-घट बासी से, जो सबको आधार दे रहा है, उसके साथ जोड़ देगा, नाम को ध्याने वाला बना देगा। अन्तर आत्मा उससे जुड़ेगा। उसमें ज्योति का विकास है, उसको देखने वाला होगा। उसमें प्रणव की धवनि हो रही है, उसके सुनने वाला होगा That is true way back to God. परमात्मा को पहुंचने का

जरिया है, उसके साथ जुड़ा हुआ, जो तुमको भी जोड़ देगा, तुम्हारा जीवन सफल हो जायेगा। तो कहते हैं, देख क्या हो रहा है ? जो मीठी चीजें हैं तू कड़वी मान रहा है, जो कड़वी हैं तेरे लिये मीठी हो रही हैं ।

फरीदा अखीं देख पतीनीया सुण सुण रीणे कन ।
खस पकन्दीं आइया, होर करीन्दी बन ।।

कहते हैं दुनिया रंग तमाशे, आंखे देख देख कर आंखों की नजर कम हो गई ।

अखीं बेख न रजिया बहु रंग तमासे ।

कान सुन सुन कर बहरे हो गये। दुनिया के यह हालत बन गई। क्या ? जवानी हाथों से निकल गई और हम बरबाद करने को लगे पड़े हैं। खेती पक रही है, क्या ? जवानी जा रही है, बुढ़ापा आ रहा है। अरे भई अब भी तुझे होश नहीं आती ? और भोगने के रसों में लगा पड़ा है। आगे ही नजर देख देख कर रह गई, सुन सुन कर बोले (बहरे) बन गये, हवस पूरी नहीं हुई। जवानी खत्म हो रही है, बुढ़ापा आ गया, तेरी हवस अभी जवान है। बताओ क्या हाल है? कितने यह लोग, कोई आलम, फाजल, कितने होंगे, मगर यह कितनी खूबसूरती से बयान कर रहे हैं। अनुभव की चीज़ है, सादा लफ़्जों में बयान करने में, रोजाना बोल-चाल में बयान कर रहे हैं, Simple (सादे) तरीके से, ताकि दुनिया कुछ समझ सके।

फरीदा काली जिनी न राविया धौली रावे कोय ।
कर साईं सियूं पिरहड़ी, रंग न बेला होय ।।

अब कहते हैं भई ''काली जिनी न राविया धौली रावे कोय।'' कहते हैं, जिसने काले बालों के साथ आत्मा को प्रभु का रस नहीं दिया, कहते हैं बुढ़ापे में कोई कोई कर सकता है। अब हमारे होश हवास ठिकाने हैं, दिल दिमाग ठिकाने हैं, हमारे जिसम में बल है, हम अपने पांव पर खड़े हैं, उस वक्त अगर इस चीज को नहीं पाया, बूढ़ी उमर में आंखें जवाब दे जाती है,कान जवाब दे जाते हैं, शरीर चलता नहीं, मुहताज हो जाता है, घरवाले मुआफ करना, निकम्मा बिठाकर, ड्योढी में बिठा देते हैं, डंडा हाथ में देते हैं कि पोते को खिलाते जाओ, और कुत्ते हांकते जाओ। बताओ उस वक्त क्या हो सकता है ? जिसने जवानी में यह काम नहीं किया, अरे भई बुढ़ापे में कोई कोई कर सकता है, हर कोई नहीं। जिसका जीवन ही जवानी में गन्दा रहा है मुआफ करना, ब्रह्मचर्य की रक्षा नहीं, दिल दिमाग ठिकाने नहीं, वह बड़ी उमर में बैठ ही नहीं सकता है। और क्या करेगा ? तो क्या कहते हैं, तो क्या करना चाहिये ? ''फरीदा काली जिनी ना राविय धोली रावे कोय, कर साईं से पिरहड़ी रंग ना बेला होय।'' कहते हैं तुमने उस परमात्मा से जुड़ना था, आत्मा को उससे (प्रभु से) जोड़ लेते हैं। उसमें नये से नया रंग जवानी का आता तुम्हें -

गुरुमुख बुढे कदे नाहीं जिन्हां अन्दर प्रेम ।

प्रेम का सिंघार जिसके अन्तर है, रंग है वह बूढ़ा क्यों हो ? जिसकी आत्मा प्रभु के रंग में रंग रही है, अरे भई वह बूढ़ा नहीं होता, वह हमेशा की जवानी को पा जाता है, उसके चेहरे पर झलक, उसकी आंख में एक कशिश रहती है, फिर इस पर आगे गुरु अमरदासजी थोड़ा, ताकि भूल में दुनिया न रहे, अपना एक हाशिया चढ़ाते हैं। गुरुबाणी में यह दिया है कि कुछ चीज ली है तो अगर कोई भुलेखा (भ्रम) का कारण दुनिया में पड़ता है तो उसको साथ Add कर दिया (जोड़ दिया है) ताकि गलती में दुनिया न जाये। बात तो बड़ी साफ कही है, मगर ताहम हो सकता है, मुमकिन है, लोग कहें बूढ़े हो गये, अब क्या करना है ? आगे उस पर थोड़ा अपना हशिया चढ़ाते हैं गुरु अमरदासजी -

फरीदा काली धौली साहेब सदा है जे को चित करेय ।
अपणां लायां प्रेम न लगई जे लोचे सब कोय ।।

गुरु अमरदासजी साहब को 70 साल की आयु में यह दौलत मिली है, गुरु अंगद साहब के चरणों में जब आये हैं, 70 साल की तलाश, बूढ़े हो गये थे। कहते हैं भई यह ठीक है काली, धौली दोनों हालतों में तुम उस प्रभु को, वह हमेशा ही तुम्हारे संग साथ है, ''फरीदा काली धौली साहब सदा है जे को चित करे।'' तुम्हारा मुंह उधर होना चाहिये भई, बूढ़ी उमर में अगर रुचि दुनिया से हट कर उधर हो गई तो भी तुम्हारे लिये Hope (उम्मीद) है, ना उमेदी नहीं। धोली रावे को, का जवाब दे रहे हैं, बूढ़ी उमर हो या जवानी हो, वह तो सदा तुम्हारे तरफ है, तुम्हारा मुंह उधर जिस वक्त भी हो तुम उस (प्रभु) को पा सकते हो। फिर क्या कहते हैं ? ''अपणां लाया प्रेम न लगई जे लोचे सबको।'' याने उस प्रभु का प्यार अन्तर में अपने बनाये से तो बन नहीं सकता। जिसको देखा नहीं उसका प्यार कैसे ? बड़ी मोटी बात। जिसको देखा नहीं, जिसका रस लिया नहीं, उससे प्यार कैसे होगा ? ग्रन्थों पोथियों के पढ़ने से तो प्यार नहीं बनता याद रखो, रुचि बनती है, ख्याल आ सकता है, प्यार उसी का होगा, जिसका रस लिया हो। जिसके साथ लगे नहीं, जिसको कभी देखा नहीं, उसका प्यार कैसे होगा ? उसका प्यार तो भई आदमी के बस नहीं किसी के लगाये से ही, अपने लगाये से नहीं लगती। जिसको वह (प्रभु) दया करे। हां हमारे दिल में तड़प हो, हम दुःखी हों, हमारी रुचि इधर दुनिया से हटे, हम किसी Permanent सुख को पाना चाहे फिर वह मालिक सामान करता है, किसी मिले हुए को मिलाता है। वह उसका Contact (परिचय) दे देता है, उस रस को पाता है, प्यार बन जाता है। बड़े प्यार से कहते हैं, भई काली और धौली, जवानी और बुढ़ापे का भी सवाल नहीं। वह तो सदा, बुढ़ापे में भी मिल सकता है, Hope दे रहे हैं। गुरु अमरदासजी साहब ने एक जगह बड़ा निर्णय किया है। वह कहते हैं-

हम नीच ते ऊतम भये भाई ।

कि हम कभी इन्द्रियों के घाट पर थे, आज उत्तम पदवी को पा गये। कहते हैं कब से ?

जब ते गुरु मत बुद्ध पाई ।

जब गुरु मिले, उनकी मति को अखत्यार किया, उस रंग को पा गये। तो काली, धौली, दोनों हालतों में वह प्रभु मिल सकता है, हमारी रुचि होनी चाहिये, उधर मुंह होना चाहिये। मगर उधर कशिश का बनना, यह उसी की दया से है। जिस पर वह नजर करे उसको। फिर हमारी तड़प का यह नतीजा है। जब आग जलती है तो Oxygen मदद को आती है, जहां भूख है, वहां रोटी है, जहां प्यास है, वहां पानी है। यह कुदरत का नियम है। Demand (मांग) और Supply (पूर्ति) का असूल है, जहां Demand वहां Supply है, जहां जरूरत है वहां वह चीज भी है। तुम्हारे अंतर जरूरत हो, महसूस हो सब तरफ से दुःखी हो कर चित्त वृत्ति हटे, फिर वह परमात्मा कहता है, यह बिचारा हट गया सुख को चाहता है, वह सामान बना देता है। किसी मिले हुये को मिला देता है। बात तो यह है। यह गुरु अमरदासजी साहब उस पर, हाशिया (टिप्पणी) दे रहे हैं।

फरीदा काली धौली साहेब सदा है जे को चित करेय ।
आपण लायां प्रेम न लगई जे लोचे सब कोय ।।
यह प्रेम प्याला ख़सम का जैं भावे तैं देय ।

कहते हैं यह प्रेम का प्याला किसको मिलता है ? जिसको वह खुद दे। बस। किसको देता है ? सवाल अब आता है। भगवान राम को वसिष्ट ने, आप योग वसिष्ट पढ़िये, बड़ा मुकालमा (वार्तालाप) है उनका, सवाल-जवाब का। जब वसिष्टजी यह कहा, यह फ़रमाया कि हे राम! जिसको आत्मदेव कृपा करे, वही उसको पा सकता है, तो भगवान राम ने कहा कि हे गुरु ! जब वह कृपा करेगा फिर देखी जायेगी। कहने लगे, नहीं हे राम ! जब तक वह कृपा न करे, हमको इन्द्रियों को दमन करके, झोली फैला कर बैठा रहना चाहिये। देना उसका अखत्यार, जब चोह दे, हमें सब तरफ से हट-हटा कर उसके दर पर बैठा रहना चाहिये। बस। देना उसके अखत्यार है ।

हमारे हजूर (बाबा सावनसिंहजी महाराज) एक मिसाल दिया करते थे, कि किसी अमीर के दरवाजे पर तुम बैठे हो, उसको पता है कि मेरे दरवाजे पर कोई बैठा है। अरे भई तुम हट-हटा कर प्रभु के दरवाजे पर बैठो, उस (प्रभु) को यह नहीं पता कि यह बच्चा मेरे दर पर बैठा है ? अगर दुनिया के लोग हमें मजदूरी देते हैं तो भगवान क्यों नहीं देगा ? वह देगा और अवश्य देगा। हमारा काम यही है कि हट-हटा कर उसके दर पर बैठना। उधर रुचि करो, उधर मुंह करो। भरे जावोगे। तुम्हारी झोलियां भरपूर हो जायेंगी।

फरीदा जिन लोइन जग मोहया से लोइन मैं डिठ ।
कजंण रेख ना सै दिया हे पंखि सुये वैहिठ ।।

यहां पर एक दोहा दिया है उन्होंने, जो अपने जीवन का एक तजरूबा हुआ, वाकिया हुआ। कहते हैं, एक बार जा रहे थे। एक वेश्या थी। उसने सुरमा आंख में डाला पर वह रड़क रहा था। वह अपनी बान्दी को मार रही थी कि अरे भई तूने सुरमा इतना पीसा नहीं कि मेरी आंखों में रड़क रहा है। बड़े जोर से मार रही थी। खैर, यह चले गये। आगे गये। एक खोपड़ी देखी। उसमें यह जो आंखों के थे ना सुराख, उसमें आलने चिड़ियों ने डाल रखे थे, अण्डे दिये हुए थे। कहने लगे वाह भई। तब यह बात कही। क्या कहते हैं ? ''फरीदा जिन लोइण जग मोहया सो लोइण मैं डिठ ''। कहते हैं मैंने वह देखी आंखे, जो दुनिया को कशिश करती थी, जो दुनिया को मोह रही हैं, उन्ही आंखों में मैंने देखा कि यह जो पक्षी हैं वहां पर घोंसले बना बैठे हैं। एक सुरमे की रड़क नहीं सहती थी जो, वहां पर आज पंखियों के घोंसले बने पड़े हैं। किस बात का मान है ? याने क्या दुनिया की हालत है। यह सिर, जिसमें खुदी का अहंकार है, मिट्टी में रुलता है। कौन देखता है ? जिन आंखों में जरा सी सुरमे की रड़क नहीं सहारी जाती थी और दुनिया को मोहती थी, वह आंखें आज पंखियों के बसेरे बने पड़े हैं ।

फरीदा कुकेंदियां, चाकेंदिया, मति देंदियां,नित ।
जो शैतान बन्जाइया से कित फेरैं चित ।।

कहते हैं, दुनिया की तरफ देखो। चांगे मारते हैं, जोर जोर से पुकार,गला फाड़ फाड़ के, बड़ी ऊंची आवाज़ के स्वर से भी लोगों को पुकारते हैं, लेक्चर देते हैं, कथा करते हैं, भई ऐसा करो, भगवान ऐसे मिलेगा। आवाज देते हुए, चलते चलते पुकार उठते हैं, चीख उठते हैं, कभी। फिर ऊपर, कभी नीचे होते हैं। यह लेक्चरारों का कायदा बयान कर रहे हैं, कि बड़े वाईज (उपदेशक) लोग हैं,जो लेक्चर करते हैं, चांगे मारते हैं, लोगों के दिलों तक पहुंचते हैं, क्या ? उपदेश देते हैं, कि अरे भई ऐसा करो ऐसा करो, ''कुकेंदियां चांगेंदिया,मति देंदियां, नित।'' दिन रात ऐसा करो भई, ऐसा करो। खुद नहीं करते। फिर ? उसका नतीजा क्या है ? कहते हैं, '' जो शैतान बन्जाया सो कित फेरें चित''। जिसका अपना ही शैतान से भरा पड़ा है चित, वह दूसरों को कैसे बदल सकता है, फेर सकता है ? जो इन्सान बोलता है, वह, दिल की हालत जैसी है, उससे रंगे हुए लफ्ज आते हैं। Out of the abudance of heart a man speaks. जो चित में बस रही हालत है, वही लफ़्ज जो उच्चारण करेगा, उससे असर ले कर आयेंगे। एक हवा है, बर्फ के साथ लग कर आ रही है, ठन्डी होगी। जिसके अन्तर काम, क्रोध के वेग चल रहे हैं ईर्षा और द्वेश के, अरे भई वह कितनी ही मीठी बातें करे, दूसरों को कैसे बदल सकता है ? वही रंग लेंगे कि नहीं ? ऐसे ही फरमा रहे हैं कि जिनके अन्तर

शैतानियत भरी पड़ी है,काम क्रोध, लोभ,मोह, अहंकार में रंगे पड़े हैं, अरे भई वह चांगे भी मारते हैं, कूकते भी हैं, लोगों को अकलें, लेक्चर भी देते हैं, कथा भी करते हैं, ज्ञान भी देते हैं। ऐसे पुरुषों के ज्ञान-ध्यान से लोगों का चित्त कैसे फिर सकता है ? यह कारण है मुआफ करना, जितना प्रचार आजकल हर एक समाज में हो रहा है। Paid प्रचार, दिल से नहीं निकल रहा है, पेट की खातर है। जो मरजी है कहला लो। एक आदमी पचास देता है, दूसरा साठ दे तो दूसरे के खिलाफ कहला लो। मेरे पास कई लोग आये। कहने लगे कि हमें अपना प्रचारक रख लो। मैंने कहा क्या करोगे ? कहने लगे हमें फलाने इतना देते हैं, आप उतना ही दे दो, हम आपका काम कर लेंगे। मैंने कहा भाई साहब, मुझे ऐसा प्रचार नहीं चाहिये। और Paid प्रचार ने सत्यानास मार रखा है हर एक समाज में। फिर ऐसों का प्रचार क्या करेगा भई ? बैठे हैं, पैसे आयें तो पैसों में है। लोगों को कहते हैं हां भई गीता का पाठ करो, गुरुबाणी का पाठ करो। बाणी तो यह पुकार पुकार कहती है, फिर बने क्या भई ? दिखावे का तो मजमून है नहीं भई। इसीलिये कोई Change नहीं हो रहा। स्वामी रामतीर्थ ने कहा, Wanted reformers,not of others but of themselves. हमें भाई प्रचारकों की जरूरत है। कैसे प्रचारक ? दूसरों को प्रचार करने वाले नहीं, आपने आपको प्रचार करने वाले। क्या मिलेगी तनख्वाह ? God-head (परमात्मा !) खबियत का नशा मिलेगा। मगर यह है नहीं। तो हर एक महात्मा किसी चीज को बयान करता है उसकी असल रंग में, कि भई खाली कूकने से, पुकारने से, दूसरों को मति देने से, कुछ नहीं बनेगा। जब तक तुम अपने आपको मत नहीं देते ना, काम नहीं बनता। तुम्हारे अन्तर ग़लाजत भरी है, शैतानियत भरी पड़ी है,लाख उपदेश करो क्या असर पड़ेगा? कुछ नहीं। अनुभव को पाओ। रंगा हो दिल जिस रंग में, वहां रंग ले कर लफ्ज वह जायेंगे। दूसरे के लिये तुम्हारे दिल में प्यार हो, तुम गाली भी निकालो वह भी मीठी लगेगी कि नहीं। जिसमें थोड़ी भी ख़सूमत (द्वेश) हो वह कितना भी ठकेगा, देखो भई दिखावा करता है। तो बचनों का असर पड़ता है भई। आमिल बन कर किसी को कहो, रंग बदल जायेगा। किसी महापुरुष का जीवन लोगे उसमें यही Beauty (खूबसूरती) रही कि वह पहिले आमिल बनता है, फिर कहता है। इसीलिये उसका असर पड़ता है, वही निशाने पर जाता है। जो वही का वही गिर जाये, वहीं रह जायगो। जो हृदय के अन्तर से बात निकलेगी ना रंगी हुई, वैसा ही रंग दे जायेगी ।

फरीदा थियो पवाई दब जे साईं लोड़े सब ।

फरमाते हैं, ''फरीदा थियो पवाई दब जे साईं लोड़े सब।'' जो यह है कि हर एक जगह परमात्मा को तू देखे, तो दबी होती है ना घास, जो फैल जाती है जमीन पर, दबे दबे पांव के नीचे, कहते हैं तू दब बन जा, नम्रता धारण कर, नीचा बन, तुम पर लोग चलें तो भी दबा रहो। अगर तू हर एक का -

हाये सगल की रेणका तो आवो हमारे पास ।

सबके चरणों की रैण बनो तब मेरे पास आवो -

नानक नन्ही दूब

गुरु नानक साहब ने भी एक मिसाल दी कि नन्ही दूब बन जाओ अगर तुम चाहते हो कि सबके अन्तर, इतने नीचे हो, इतने नीचे हो कि सबके अन्तर वहीं नजर आने लग जाये। कबीर साहब ने क्या कहा ? सारा जहान ही हमसे अच्छा है ।

कबीर हम तज भलो सब लोक ।
जिन ऐसा कर जानिया मीत हमार सोई ।।

हमारा मित्र वही है, जो अपने को सबसे नीचा समझता है, और सबकी इज्जत करता है, सबके अन्तर परमात्मा है, कहते हैं वह हमारा मित्र है। कहते हैं इतनी नम्रता धारण करो जैसे दूब होती है। फिर क्या होगा ? तुम्हारे अन्दर वह नजर बनेगी जिससे सबके अन्तर वह नजर आयेगा। जब तक अहंकार है, टिबे हैं, तब तक वहां क्या नजर आयेगा ? नम्रता धारण करने के लिये कह रहे हैं। Humility (नम्रता) बड़ी भारी बरकत है। नम्रता कहो, यह सन्तों का श्रृंगार होती है सेन्ट आगस्टन से पूछा गया कि महाराज परमात्मा कैसे मिलता है ? तो कहा, First humility, second humility, third humility. कि नम्रता धारण करो। क्यों ? अगर नम्रता नहीं होगी तो तुम किसी के पास ही नहीं जाओगे। नम्रता हो तभी जाता है ना ! अहंकार में भरा पड़ा है, मैं आलिम हूं, मैं फाजिल हूं, मैं बहुत कुछ जानता हूं, मैं अमीर हूं, मैं क्यों जाऊं? आप देखेंगे, जब अनुभवी पुरुष आते हैं तो उनके पास Average तबका के लोग बहुत फ़ायदा उठा जाते हैं, बनिस्बत दूसरों के । पण्डित लोग अपनी पण्डिताई में रह जाते हैं, हाकिम हकूमत के नशे में रह जाते हैं। तो कहते हैं, नम्रता हो, तब तुम जाओ। पहिला तरीका यह है। आगे गये किसी के पास, वहां भी नम्रता धारण करो। अगर वहां तुम यह जतलाने के लिये जा रहे हो कि तुम बहुत कुछ जानते हो, अरे भई जो जानते हो जानते ही हो। जाओ देखो वहां से क्या मिलता है ? जो प्याला सुराही के नीचे होगा, वह भर जायेगा। जो प्याला सुराही से ऊपर रहेगा ? तो फिर नम्रता धारण करो। कहते हैं अगर कोई चीज मिल गई, तो वह एक दात मिल गई, बखशिश है ना, तुम्हारा क्या है उसमें ! जिस डाली में फल लग जाता है, वह भारी हो कर जमीन के साथ लग जाती है जब सवार मन्जल मकसूद पर पहुंचता है तो वह पैदल हो जाता है। अरे भई नम्रता बड़ी भारी बरकत है। सब महापुरुषों ने यही कहा। ग़रीबी और नम्रता, इंकसारी, अबूदियत के मुतल्लिक जिकर आता है, कि गुरु नानक साहब को तीन चौथाई नम्रता दी गई। भई सन्तों का सिंगार है नम्रता। अहंकार में नहीं जाते, वह नम्रता में रहते हैं, यह सब उसी का है, मेरा कुछ नहीं, Credit उसको है। वह Con-

scious co-worker होते हैं, इसलिये माया उनको गिरा नहीं सकती है, नहीं तो माया सबको गिराती है। जहां मान बड़ाई आई, वहां गिर गये। तो कहते हैं, तुम नन्ही दूब बन जाओ, बिलकुल (प्रभु) को देखना चाहते हो तो। आगे कुछ और भी कहते हैं -

फरीदा थियो पवाई दब जे साईं लोड़े सब ।
इक छिजै भया लताड़िये, ताँ साईं दे दर्वाड़िये ॥

कहते हैं घास कट जाती है, फिर पांवों के तले लताड़ी जाती है। क्या ? तेरी हौंमे (अंह भावना) न रहे, नम्रता धारण कर ले, कोई लताड़े तो भी उसका Reaction नहीं। कहते हैं फिर तू प्रभु के दर्वाजे में दाखल हो सकता है। यह नम्रता की तारीफ की जा रही है। ऐसी नम्रता को धारण कर।

एक छिजै भया लताड़िये तां साईं के दर्वाड़िये ।
फरीदा ख़ाक ना निंदिये, खाकू जेड़ न कोय।
जीवन्दिया पैरां तले मुयां ऊपर होय ॥

कहते हैं मिट्टी की निन्दा मत करो। जीते जी पावों के नीचे हैं, मर कर यह ऊपर हो जाती है। यह मुसलमान फकीर थे। कबर में मिट्टी ऊपर आ जाती है ना, कहते हैं जीते जी तो पावों के नीचे हैं, मर कर ऊपर आ जाती है। इसको क्यों निन्दना चाहिये ? ''फरीदा खाक न निंदिये खाकू जेड़ न कोय, जीवन्दियां पैरा तले मोयां ऊपर होय'' तो यही गुरु रामदासजी ने फरमाया । वह भी यही कहते हैं -

ज्यों धरती चरण तले ते ऊपर आय ।

बात तो एक ही है। तो कहते हैं ख़ाक की भी निन्दा न करो। हर एक में अपनी अपनी खूबसूरती है। क्या मतलब ? नीच से नीच को भी बुरी नजर, बुरी भावना से न देखो। उसकी अगर कोई त्रुटि है, Shortcoming है, उसको प्यार से धोओ। मगर निन्दा क्यों ? आखर है तो उसमें आत्मा ना। उसी परमात्मा के आधार पर चल रही है ना। यह जितने तत्व हैं यह भी उसी के आधार पर चल रहे हैं। इसलिये कहते हैं निन्दा किसी की मत करो। गया से गया, गुजरा हो उसको भी आदर मान दो। जिसकी रहनी ऐसी बन जाये, बताओ वह सारी दुनिया को सुख देने वाला होगा कि नहीं ?

फरीदा खाक न निंदियें खाकू जेड़ न कोय ।
जिंवदियां पेरां तले मुयां ऊपर होय ॥

बात असल में क्या है, कि दुनिया में हम जितना मान कर रहे हैं, यह सब झूठे हैं। अगर शरीर का मान है, मैं बड़ा खूबसूरत हूं, अरे भई जिसकी सत्ता से आत्मा जिसम के साथ कायम है यह उसकी कृपा है। जब वह सत्ता हटा ली जाती है, यह मुराद है, इसको कौन पूछता है?-

झूठ मान कहा करें जग सुपने ज्यों जान ।
इस में कछु तेरो नहीं नानक कहियो बखान ॥

खोल खोल कर कहते हैं मैं बयान कर रहा हूं, अरे भई इनमें तेरा कुछ नहीं। यह जिसम नहीं, ताल्लुकात नहीं, सारे सामान नहीं। सब यहीं के यहीं रह जायेंगे। इस पर तू किस बात का मान करता है ? फिर क्या कहते हैं -

जाग लियो रे मना जाग लियो कहां गाफल सोया है ।

ऐ भई तू सो रहा है जाग। क्यों ?

जो तन दिया सो भी संग न होय ॥

कहते हैं पैदा होते हुए (यह तन) पहिला संगी और साथी है जो तुम्हारे साथ आता है, वह भी तो तुम्हारे साथ नहीं जाता। बताओ वह जिनका ताल्लुक इस शरीर करके बना, वह कैसे जायेंगे ? पहिला संगी साथी हमारी आत्मा का दुनिया में आते हुए यह तन था बाकी सामान इस तन करके बने। जब यह तन ही साथ नहीं जायेगा तो बाकियों का क्या मान रहा भई ? यह At home होने की (दिल में बिठाने की) बात है ।

धन, दारा, सम्पत्ति सकल गृह, कछु संग न चाले सबै जाना ।

जिसम, सम्पत्ति बाल बच्चे, रूपया पैसा, भई तुम्हारे साथ नहीं जायेंगे। किसके साथ गये आप देखो तो सही। अगर यह बात At home हो जाये कि सबने जाना है, फिर कौन सा हमारा हमदर्दी और मददगार हो सकता है उसको पकड़े ।

नानक कचड़िया संग तोड़, ढूंढ सज्जन सन्त पकियां।
यह जीवन्दे बिछड़े ओह मोयां न जाही छोड़ ॥

यह तो जीते जी छोड़ जायेंगे, वह मर कर भी नहीं छोड़ेंगे। कच्चों का संग छोड़ दो, सज्जनों को पकड़ों। वह कौन हैं ? जो सन्त जन हैं, सन्त कौन हैं ? भेख का नाम सन्त नहीं। सन्त की तारीफ़ गुरुबाणी में आई है ।

हमरो भरता बड़ो विवेकी आपे सन्त कहावे ।

हमारा भरता बड़ा विवेकमान है। जब वह किसी जिसम पर इज़हार करता है, उसको लोग सन्त कहते हैं।

प्रभ जी बसें साध की रसना ।

वह Mouthpiece of God बन गया ।

साध रूप अपना तन धारिया ।

ऐसा जो Mouthpiece है उसका नाम साधु और सन्त है । ❐